बीएड – 114

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

शिक्षा में अभिनय एवं कला

Drama & Art in Education

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

संरक्षक	**अध्यक्ष**
प्रो. अशोक शर्मा	**प्रो. एल.आर. गुर्जर**
कुलपति	निदेशक (अकादमिक)
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक एवं सदस्य

**** संयोजक**	*** संयोजक**
डॉ. अनिल कुमार जैन	**डॉ. रजनी रंजन सिंह**
सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ	सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सदस्य

प्रो. (डॉ) एल.आर. गुर्जर
निदेशक (अकादमिक)
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो. जे. के. जोशी
निदेशक, शिक्षा विद्या शाखा
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रो. दिव्य प्रभा नागर
पूर्व कुलपति
ज.रा. नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रो. दामीना चौधरी (सेवानिवृत्त)
शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो. अनिल शुक्ला
आचार्य शिक्षा ,
लखनऊ **विश्वविद्यालय**, लखनऊ

डॉ. रजनी रंजन सिंह
सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

डॉ. अनिल कुमार जैन
सह आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

डॉ. कीर्ति सिंह
सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

डॉ. पतंजलि मिश्र
सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

डॉ. अखिलेश कुमार
सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

***डॉ. रजनी रंजन सिंह** सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ 13.06.2015 तक

****डॉ. अनिल कुमार जैन,** सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ 14.06.2015 से निरन्तर

समन्वयक एवं सम्पादक

समन्वयक (बी.एड.)	**लेखन एवं सम्पादक**
डॉ. कीर्ति सिंह	**डॉ. अखिलेश कुमार**
सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ	सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

आभार

प्रो. विनय कुमार पाठक
पूर्व कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. अशोक शर्मा	**प्रो .एल.आर .गुर्जर**
कुलपति	निदेशक (अकादमिक)
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,कोटा	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,कोटा
प्रो. करण सिंह	**डॉ. सुबोध कुमार**
निदेशक	अतिरिक्त निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण प्रभाग	पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण प्रभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,कोटा	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,कोटा

उत्पादन 2015, ISBN : 978-81-8496-534 -6

इस सामग्री के किसी भी अंश को व.म.खु.वि.वि., कोटा, की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अन्यत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। व.म.खु.वि.वि., कोटा के लिए कुलसचिव, व.म.खु.वि.वि., कोटा (राजस्थान) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1. 2.	निर्देशिका का प्रयोजन एवं उद्देश्य	1
	कला: संकल्पना, परिभाषाएं एवं विशेषताएं, उनके प्रकार एवं समान्य लक्ष्य	3
	खंड नाट्य शिक्षण ’A‘	7-20
3.	नाटक एवं नाट्य शिक्षा परिभाषा एवं महत्व	7
4.	नाट्य शिक्षा की कक्षा के आयोजन के प्रमुख तत्व	10
5.	नाट्य शिक्षा की कक्षा के उदहारण	16
	खंड ’B‘दृश्य कला शिक्षण	21-36
6.	चित्रकला शिक्षण: परिभाषा एवं महत्व	21
7.	बच्चो में चित्रकला के विकास का चरण : लान्फेल्ड का सिद्धांत	23
8.	विभिन्न स्तरों पर चित्रकला / दृश्य कला शिक्षण के उद्देश्य	30
9.	चित्रकला शिक्षण की कक्षा का आयोजन के प्रमुख तत्व	32
10.	चित्र कला शिक्षण का एक उदहारण	35
	खंड आवश्यक निर्देश ’C‘	37-38
11.	प्रोजेक्ट रिपोर्ट जमा करने हेतु आवश्यक निर्देश	37
12.	सन्दर्भ ग्रन्थ एवं अन्य अध्ययन	38

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठकों से आग्रह

प्रिय पाठकों,

शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2009 एवं 2010 में शिक्षक प्रशिक्षण के लिए दी गई अनुशंसाओं के क्रम में एनसीटीई द्वारा 2014 में तैयार किये गये पाठ्यक्रम की अनुपालना में विश्वविद्यालय ने अपनी विद्या परिषद् की स्वीकृति के पश्चात अन्तिम रूप में बने बी.एड. (ओडीएल) पाठ्यक्रम के अनुसार प्रथम वर्ष की स्व-अधिगम सामग्री (SLM) तैयार की है। यह पाठ्यसामग्री विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के सदस्यों और विश्वविद्यालय से जुड़े हुए अन्य शिक्षाविदों के अथक प्रयास से तैयार की गई है। यह एनसीटीई द्वारा 2014 में सुझाये गये नये पाठ्यक्रम के प्रकाश में किया गया प्रथम प्रयास है। आप प्रबुद्ध पाठक हैं। आपको इस SLM के किसी विषय, उप विषय, बिन्दु या किसी भी प्रकार की त्रुटि दिखाई पड़ती है या इसके परिवर्द्धन हेतु आप कोई सुझाव देना चाहते हैं तो शिक्षा विद्यापीठ सहर्ष आपके सुझावों को अगले संस्करण में सम्मिलित करने का प्रयास करेगा। आप अपने सुझाव हमें निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, रावतभाटा रोड, कोटा - 324010 या मेल soe@vmou.ac.in पर भेजने का कष्ट करें।

धन्यवाद

(डॉ. अनिल कुमार जैन)
निदेशक
शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

नाट्य एवं कला शिक्षा

(Drama & Art Education)

1. निर्देशिका का प्रयोजन एवं उद्देश्य

सुप्रसिद्ध शिक्षाविद जैकस डेलर्स की अध्यक्षता में गठित '21वीं सदी में शिक्षा' का अंतर्राष्ट्रीय आयोग (Intrnational Commission on Education in Twenty First Century) जिसकी रिपोर्ट 'लर्निंग द ट्रेजर विद इन' (Learning the Treasure Within) शीर्षक से यूनेस्को द्वारा 1996 में प्रकाशित किया गया, के अनुसार 21वीं सदी में शिक्षा के निम्नाकित चार आधार स्तम्भ होने चाहिए:

1. **ज्ञान के लिए सीखना (Learning to Know):**यह स्तम्भ इस बात पर जोर देता है कि हमे ज्ञान के लिए सीखना चाहिए।
2. **करने के लिए सीखना(Learning to do):** यह स्तम्भ इस बात पर जोर देता है कि शिक्षा का उद्देश्य किसी व्यवसाय के लिए व्यक्ति में उपयुक्त कौसहलों का विकास करना होना चाहिए।
3. **होने के लिए सीखना(Learning to be) :** यह यूनेस्को की रिपोर्ट का मुख्य थीम है जो शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं उसके संपूर्ण विकास एवं सामाजिक / सामुदायिक हितों के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को समझने पर पर जोर देता है।
4. **साथ रहने के लिए सीखना (Learning to Live Together):** साथ रहने के लिए सीखना (Learning to Live Together) यह बताता है कि २१वीं सदी में शिक्षा का उद्देश्य दूसरों की समझ विकसित करना भी होना चाहिए ताकि शांति पूर्ण वातावरण में जीवन व्यतीत किया जा सके। इसके अंतर्गत दूसरों के दृष्टिकोण को समझना, समाज को समझना, समाज के नियम कायदे और रीति रिवाज आदि को समझना भी शामिल है।

यूनेस्को द्वारा प्रकाशित यह रिपोर्ट एक क्रन्तिकारी रिपोर्ट है जिसने संपूर्ण विश्व की शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया। यदि हम देखें तो इसके चार स्तंभों में से दो स्तम्भ: 'होने के लिए सीखना (Learning to be)' एवं 'साथ रहने के लिए सीखना (Learning to Live Together)' शिक्षा में कलाओं के उपयोग का एक मजबूत पैरोकार है। आपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए

जीवन में स्वतंत्रता एवं आनंद का महत्त्वपूर्ण स्थान है जो हमें विभिन्न कलाओं के मध्य से सहज प्राप्य हो सकती है। अतः शिक्षा के इस उद्देश्य की पूर्ती हेतु कला शिक्षा एक प्रमुख साधन हो सकती है। साथ ही, साथ रहने के लिए सीखना अर्थात दूसरों की समझ विकसित करना, अन्य व्यक्तियों से प्रभावी सम्प्रेषण, समाज को समझना, समाज के नियम कायदे और रीति रिवाज आदि को समझना भी शामिल है और इनके लिए भी विभिन्न कलाएं एक सशक्त माध्यम हो सकती हैं, क्योंकि विभिन्न कलाओं का सामान्य उद्देश्य है सम्प्रेषण, विभिन्न अंतर्द्वंद्वों का उद्घाटन एवं आनंद की प्राप्ति। शिक्षा के इन्ही उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संपूर्ण विश्व में कला शिक्षण पर कफी जोर दिया जा रहा है और तदनुसार आपके बी एड के नवीन पाठ्यक्रम में **कला एवं नाट्य शिक्षा** एक अनिवार्य पत्र / पाठ के रूप में शामिल किया गया है जो ५० अंकों का है। इसके बी एड के पाठ्य क्रम में शामिल किये जाने का उद्देश्य अत्यंत व्यापक है। वस्तुतः समाज में हो रहे मूल्यों का ह्रास शिक्षाविदों की चिंता का वैश्विक विषय है। वर्तमान शिक्षा पद्धति सूचना का भंडार तो है परन्तु वह कहीं न कहीं एक बच्चा जो राष्ट्र का भविष्य होता है, उसमे सामाजिक एवं नैतिक मूल्य को विकसित करने में सक्षम नहीं साबित हो पा रहा है। जिसके कारणों में प्रमुख है छात्रों का आपने समाज, अपनी संस्कृति, अपने रीति रिवाज से परिचय न हो पाना, शिक्षा का मूल्य भौतिक सुख सुविधाओं की उपलब्धि एवं पैसों से जोड़ा जाना, बच्चों में ज्ञान की बजाए परीक्षा में अधिक अंक लेन की अंधी होड़, माता पिता द्वारा बच्चों की सफलता की अन्य बच्चों से तुलना एवं इस कारण बच्चों में बढता तनाव (जो कई बार बच्चों की बढती आत्महत्या की घटनाओं के रूप में सामने आता है) पढाई और बस्ते का बढता बोझ और बच्चों से छिनता बचपन, धन कमाने के क्रम में कहीं पीछे छूटते रिश्ते एवं टूटते बिखरते परिवार आदि हैं। मानसिक तनाव के इस बढ़ते युग में कला एवं नाट्य शिक्षा यदि बच्चों का कला प्रेम जागरूक कर सके तो न केवल बच्चों के मानसिक तनाव को कम करने में मदद मिलेगी बल्कि बच्चों के अन्दर नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने में भी मदद मिलेगी जो प्रकारांतर से एक उन्नत समाज, एक उन्नत राष्ट्र एवं एक शांतिपूर्ण विश्व की स्थापना कर सकने में सहायक होगी। नाट्य एवं कला शिक्षा के बालक की शिक्षा में महत्व के बारे में इस निर्देशिका में आगे विस्तार से चर्चा की जाएगी। आइये सर्वप्रथम हम इस निर्देशिका के उद्देश्यों पर चर्चा करें:

इस निर्देशिका के निम्नांकित उद्देश्य हैं:

- कला एवं कला शिक्षा की संकल्पना से अवगत करना
- नाटक एवं नाट्य शिक्षा की संकल्पना से अवगत कराना
- कला एवं कला शिक्षा की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं जीवन में महत्व को समझना
- नाटक एवं नाट्य शिक्षा की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं जीवन में महत्व को समझना
- कला एवं नाट्य शिक्षा की विभिन्न स्तर की कक्षाओं के प्रभावी आयोजन के तरीकों के समझना

2. कला: संकल्पना, परिभाषाएं एवं विशेषताएं, उनके प्रकार एवं समान्य लक्ष्य

2.1 कला की परिभाषा एवं विशेषताएं (Definition & Nature of Arts)

दुनिया में सभी व्यक्तियों का अभिव्यक्ति का तरीका प्रायः अलग- अलग होता है। किसी की अभिव्यक्ति दृश्य हो सकती है, किसी की श्रव्य, किसी की स्पर्शात्मक। जब एक शिक्षक इन भिन्न – भिन्न अभिव्यक्ति के माध्यम को अपनी शिक्षण प्रक्रिया में शामिल कर लेते हैं तब वे व्यक्ति की संप्रेषण क्षमता को और प्रभावी बनाने में सक्षम हो जाते हैं। अभिव्यक्ति कला शिक्षण (Expressive Art Education) का तात्पर्य कला (Art),संगीत (Music), नृत्य (Dance), ड्रामा (Drama), कविता (Poetry), रचनात्मक लेखन (Creative Witing), खेल (Play), रेत चित्र (Sand Tray) आदि विधाओं के शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में उपयोग से है ताकि ये प्रक्रियाएं और प्रभावी हो सकें और बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद कर सकें।

कलाओं का तात्पर्य विचारों, अनुभवों एवं भावनावों की संगीत, चित्र, भाषा, मुद्रा, गति एवं भाव भंगिमाओं के माध्यम से सुनियोजित अभिव्यक्ति है। कलाएं बच्चे को संवेदी, भावनात्मक, बौद्धिक एवं रचनात्मक रूप से समृद्ध करती हैं और उसके सर्वांगीण विकास में मदद करती हैं। समाज में उपलब्ध कई स्तरीय वस्तुयें कई प्रकार के कलाओं से विकसित हुई हैं और वे सांस्कृतिक विकास में सहायक एवं समाज कल्याण की भावना के विकास में सहायक हैं। कला शिक्षा छात्रों को सम्प्रेषण के वैकल्पिक तरीके सीखने मदद करता है। यह विभिन्न व्यक्तिगत एवं नवीन विचारों को प्रोत्साहित भी करता है और बच्चे में बहुबुद्धि (Multiple Intelligence) के विकास में अत्यंत सहायक है। प्राथमिक स्तर पर एक उद्देश्य पूर्ण कला शिक्षा (Purposeful Art Education) जीवन को उन्नत करने एवं रचनात्मक क्षमता को उत्तेजित करने, विभिन्न कौशलों को बढ़ाने एवं बालक के समायोजन (Adjustment) में सहायक होती हैं।

सुप्रसिद्ध प्रयोजनवादी शैक्षिक दार्शनिक जॉन डीवी (1906) के अनुसार, "कोई व्यक्ति क्या कर रहा है, इसका अनुभव करना एवं उस अनुभव का आनंद उठाना, उस संगामी अन्तर्जीवन की प्रक्रिया के एक पक्ष में खो जाना और सामग्री सन्दर्भों का तदनुसार सुनियोजित विकास करना ही कला है"।

यदि उपरोक्त परिभाषा के विश्लेषण करें तो पाएंगे कि कला में निम्नांकित विशेषताएं होती हैं:

- एक नवीन निर्माण करना
- उस नवीन निर्माण का अनुभव करना

- उस नवीन निर्माण के अनुभव की अभिव्यक्ति
- कलाकार का कला निर्माण की प्रक्रिया में खो जाना
- कलाकार के द्वारा कला-प्रक्रिया का आनंद उठाना
- कला प्रक्रिया के एक पक्ष में खो जाना
- कलात्मक सामग्री का सुनियोजित विकास
- कला निर्माण के दौरान कलाकार की क्रियाशीलता

2.2 कलाओं की अद्वितीय विशेषताएं :

कलाओं की कुछ अद्वितीय विशेषताएं हैं जो शाब्दिक अभिव्यक्ति में नहीं पाई जाती। इनमें से प्रमुख हैं:

- स्व अभिव्यक्ति (Self Expresion)
- सक्रिय सहभागिता (Active Paticipation)
- कल्पनाशीलता (Imagination)
- मन एवं शरीर का संबंध(Mind Body connections)
- समूह गत्यात्मकता (Group Dynamics)
- समूह भावना का विकास (Development of Team Spirit)
- नेतृत्व क्षमताओं का विकास
- सामाजिक समायोजन (Social Adjustment)
- सहनशीलता (Tolerance)
- धैर्य एवं स्थिरता(Patience and Persistence)

2.3 कलाओं के प्रकार(Varients of Arts):

यूँ तो कला को विभिन्न प्रकारों एवं रूपों में बांधना संभव नहीं है परन्तु अपने अध्ययन की सुविधा के लिए कला एवं नाट्य शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित उपागमों को दो बड़े भागों प्रदर्शन कला एवं दृश्य कला में बाँटा जा सकता है; जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है:

1. **प्रदर्शन कला (Performing Arts):** दृश्य कला से इतर प्रदर्शन कला, कला का वह प्रकार है जिसमे शारीरिक भाव भंगिमा, आवाज, संवादों एवं शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से किसी विचार अथवा भाव को अभिव्यक्त किया जाता है। प्रदर्शन कला के दौरान भाव / विचार / कहानी आदि का सम्प्रेषण थियेटर के विभिन्न अवयवों, यथा अभिनय, पहनावा, दृश्यों, प्रकाश , संगीत, आवाज एवं संवाद के माध्यम से किया जाता है।

प्रदर्शन कला के प्रकार:

- रंग कला (Drama)
- नृत्य कला (Dance)

2. **दृश्य कला (Visual Arts)**

दृश्य कला चित्रात्मक निर्माण के द्वारा रचना एवं सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम है । यह एक अद्वितीय सांकेतिक क्षेत्र है एवं एक ऐसा विषय है जिसकी अपनी विशेष अपेक्षाएं एवं अधिगम हैं। दृश्य कला बच्चे को काल्पनिक जीवन एवं वास्तविक संसार के बीच स्वस्थ सम्बन्ध बनाने में एवं अपने विचारों भावनाओं एवं अनुभवों को दृश्य रूप में को नियोजित करने एवं अभिव्यक्त करने में मदद करता है। चित्रकारी, पेंटिंग आदि की रचना करते हुए बालक नए ज्ञान को पुराने अनुभवों से जोड़कर उनकी अर्थपूर्णता को समझने का प्रयास कर्ता है दृश्य कला शिक्षण खोज, अन्वेषण, प्रयोग आदि के माध्यम से बच्चे की रचनात्मकता एवं सौन्दर्यनुभव कोबढाता है।

दृश्य कला के विभिन्न प्रकार:

- चित्रकला (Drawing)
- रंग एवं पेंटिंग(Colour & Painting)
- प्रिंट (Print)
- मृत्ति कला / मूर्तिकला (Clay & Sculpture)
- रेत चित्र कला (Sand Tray Art)

2.4 कला शिक्षा के सामान्य लक्ष्य (General Aims of Drama & Art Education)

नाट्य एवं कला शिक्षा के निम्नांकित सामान्य लक्ष्य हैं:

- बालक को विभिन्न कलाओं द्वारा अपने विचार, भावनाओं एवं अनुभवों की खोज, स्पष्टता एवं अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना,
- बालको को सौन्दर्यनूभूति प्रदान करना एवं बालक में दृश्य कलाओं, संगीत ड्रामा, नृत्य, साहित्य के प्रति सौंदर्य चेतना विकसित करना,
- बालकों में वातावरण के दृश्य, मौखिक, स्पर्श, स्थानिक गुणों के प्रति जागरूकता एवं संवेदन शीलता विकसित करना,
- बालक में रचनात्मक अभिव्यक्ति की योग्यता एवं क्षमता विकसित करना जो आनंद पूर्ण हो,

- बालक को दैनिक जीवन की विभिन्न समस्याओं को उपयुक्त कल्पनाशीलता का प्रयोग करते हुए रचनात्मक रूप से हल करने में सक्षम बनाना और उसकी मौलिकता को बढ़ावा देना,
- बच्चे के स्व अभिव्यक्ति के माध्यम से उसमे आत्म विश्वास एवं आत्म सम्मान की भावना को बढ़ाना,
- बच्चे को विभिन्न संसकृतियों से परिचित कराना एवं उसमे आपने राष्ट्र, अपनी संस्कृति आदि के प्रति सम्मान एवं श्रेष्ठता का भाव विकसित करना।

वर्तमान निर्देशिका में कला शिक्षा के अंतर्गत हम सिर्फ दो कलाओं: नाटक / रंग कला जोकि एक प्रदर्शन कला है और चित्रकारी एवं पेंटिंग जो कि एकदृश्य कला है, के बारे में चर्चा करेंगे। सुविधा के लिए इस निर्देशिका को तीन खण्डों में बाँट दिया गया है: खंड A में नाट्य शिक्षा के बारे में चर्चा की गयी है और खंड B में दृश्य कला का वर्णन है । इस निर्देशिका के खंड C में प्रोजेक्ट रिपोर्ट से सम्बंधित आवश्यक निदेश दिए गए हैं जिन्हें प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने से पूर्व अवश्य पढ़ें चूँकि बी एड के नवीन पाठ्य क्रम पर आधारित स्व अध्ययन सामग्री का यह प्रथम प्रकाशन है, अतः इसके प्रति आप अपना फीडबैक हमें अवश्य भेजें जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और वह इस मार्गदर्शिका को उन्नत बनाने में हमारी मदद करेगा। आपके फीडबैक एवं आपके महत्त्वपूर्ण सुझावों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं।

Part-A
नाट्य शिक्षा
(Drama Education)

3. नाटक एवं नाट्य शिक्षा परिभाषा एवं महत्व

3.1 नाटक क्या है? (What is Drama?)

नाटक कला का एक रूप है, जो व्यक्ति के तनाव एवं द्वंद्व की खोज करती है। यह सामान्यत: कला का वह रूप है जिसमें दर्शकों के बीच एक कहानी का प्रस्तुतीकरण, संवादों एवं शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से किया जाता है। नाटक के दौरान कहानी का सम्प्रेषण थियेटर के विभिन्न अवयवों, यथा अभिनय, पहनावा, दृश्यों, प्रकाश , संगीत, आवाज एवं संवाद के माध्यम से किया जाता है। नाटक एवं उसके द्वारा संप्रेषित सन्देश का बौद्धिक एवं भावनात्मक प्रभाव नाटक के कलाकारों एवं दर्शकों/श्रोताओं दोनों पर होता है। नाटक एक दर्पण के समान है जिसमें हम अपनी छवि का मूल्यांकन कर सकते हैं एवं मानव व्यवहार तथा भावनाओं को गहराई से समझ सकते हैं। नाटक, जीवन के सत्यों को उद्घाटित करती कहानियाँ के द्वारा, उन पर विभिन्न समय एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को प्रदर्शित करते हुए, हमारे दृष्टिकोण को वृहत बनाती है।

3.2 नाट्य शिक्षा क्या है? (What is Drama Education?)

नाट्य शिक्षा, कला के नाटक रूप का शैक्षिक-संसाधन के रूप में उपयोग करता है। इसमें अभिनयकर्ता का प्रशिक्षण भी समाहित है जो बच्चों के भौतिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देती है। यह एक बहुसंवेदी उपागम है जो निम्नांकित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उन्मुख होता है -

1- आत्म चेतना में वृद्धि (मन, शरीर, आवाज) एवं समन्वय एवं समानुभूति
2- विचारों के शाब्दिक एवं अशाब्दिक सम्प्रेषण में रचनात्मक एवं स्पष्टता को बढ़ावा।
3- मानव व्यवहार अभिप्रेरणा, विविधता, संस्कृति एवं इतिहास की गहरी समझ में बढ़ावा।

नाट्य शिक्षा थियेटर के अवयवों यथा पहनावे, दृश्य, प्रकाश, संगीत, संवाद, ध्वनियाँ, कहानियां की पुनरावृत्ति आदि का प्रयोग बच्चों के अधिगम अनुभवों, को बढ़ाने के लिए किया जाता है। नाट्य शिक्षा नाट्य क्रियाओं के दौरान छात्रों को विभिन्न भूमिकाओं का अनुभव कराता है, जो उसके बाद के जीवन में काम आते हैं।

3.3नाट्य शिक्षा के लाभ/महत्व (Importance / Benefits of Drama Education):

1. **छात्रों के आत्मविश्वास में वृद्धि :**

कक्षा में एक नयी भूमिका को स्वीकार करना एवं दर्शकों के सामने मंच पर एक पात्र विशेष की भूमिका अदा करना बच्चों को उनके विचारों और योग्यताओं पर विश्वास करने में मदद करता है। नाटक की क्रियाओं द्वारा प्राप्त आत्मविश्वास बाद के जीवन में उनके कार्य, उनके विद्यालय एवं उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं में शामिल हो जाता है।

2. **छात्रों की कल्पनाशीलता में वृद्धि**

नाटक के क्रम में रचनात्मक विकल्पों की तलाश, नये विचारों को सोचना, परिचित वस्तुओं को नवीन तरीकों से दर्शकों के सामने रखना आदि क्रियाओं बच्चों की कल्पनाशीलता में वृद्धि करती हैं। और जैसा कि आइंस्टीन ने कहा है कल्पनाशीलता, ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है।

3. **समानुभूति का विकास** : भिन्न भिन्न परिस्थितियों में, विभिन्न संस्कृति के कलाकारों के बीच अलग अलग किरदारों को निभाते हुए बच्चे में दूसरों के दृष्टिकोण को समझने में, और उनके प्रति सहनशील बनाने में मदद करता है तथा इस प्रकार प्रकारातर से उनकी समानुभूति को बढ़ाता है।

4. **सहयोग भाव/सामूहिकत भाव को बढ़ावा** : नाट्य कला प्रतिभागियों के विचारों एवं योग्यताओं को जोड़ता है। इस सहयोगात्मक प्रक्रिया में पारंपरिक वैचारिक आदान-प्रदान, पूर्वाभ्यास, प्रस्तुतिकरण आदि शामिल हैं। ये क्रियायें बालकों मे सहयोग की भावना एवं समूह की भावना का विकास करता है। जो जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

5. **एकाग्रता को बढ़ावा** - नाट्य कला एक बड़े दर्शक समूह के सामने प्रस्तुत किया जाता है। ऐसे में इसके पूर्वांभ्यास, प्रस्तुतीकरण। प्रतिभागियों से उच्च स्तर की एकाग्रता अपेक्षिक होती है। यह एकाग्रता विचारों, शारीरिक क्रियाओ आदि सभी चरणों पर।

6. **संप्रेषण कौशल में वृद्धि एवं वाणी** सभी के स्तर पर आवश्यक होती है। एकाग्रता का यह अभ्यास बाद के जीवन में सभी स्तरों पर बालक की मदद करता है।

7. **समस्या समाधान कौशलों का विकास** - नाटक में भाग लेते हुए बच्चे कैसे, किससे, कब, कितना और कैसे सम्प्रेषण करना है यह सीखते हैं साथ ही कई बार नाटक के बीच में आयी अप्रत्याशित परिस्थितियों को संभालने के लिये त्वरित सोच एवं त्वरित समस्या समाधान में मदद करता है।

8. **खेल/मस्ती/मनोरंजन**

नाटक बालकों के लिए खेल, मस्ती, एवं मनोरंजन का कार्य है। जो बच्चों की अभिप्रेरणा को बढ़ाता है एवं उनका तनाव कम करता है।

9. **भावनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम** : नाटक क्रियायें बच्चे को विभिन्न प्रकार की भावनाओं एवं दमित इच्छाओं को अभिव्यक्त करने करने का एक माध्यम प्रदान करती है। यह बालकों की आक्रामकता एवं तनाव को सुरक्षित रचनात्मक तरीके से कम

करने में मदद करती है एवं प्रकारांतर से उनमें असामाजिक व्यवहारों की संभावना को कम कर देती है।

10. आरामदायी

कई नाट्य क्रियायें बच्चों को शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक तनावों को अभिव्यक्ति करने एवं उत्पन्न तनावों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

11. **आत्मानुशासन को बढ़ावा**:

नाटक विचारों के क्रियाओं एवं क्रियाओं के प्रस्तुतकरण के रूप में प्रतिफलन है जो बच्चों को अभ्यास एवं धैर्य की कीमत बताती है। नाटयकला एवं रचनात्मक गतिशीलता बच्चों के आत्मनियंत्रण को बढ़ाता है।

12. पारस्परिक विश्वास को बढ़ावा

नाटक की विभिन्न प्रक्रिया के दौरान प्रतिभागियों के बीच होने वाली अंत: क्रिया प्रतिभागियों का नाटक की क्रियाओं में शारीरिक गतिशीलता होती है जो बच्चे के शरीर को क्रियाशील रखते हुए उनमें लचीलापन समन्वय संतुलनएवं नियंत्रण को बढ़ाती हैं।

13. शारीरिक स्वास्थ्य लाभ

अपने प्रति, दूसरों के प्रति और उस प्रक्रिया के प्रति विश्वास बढ़ाता है। नाटक की क्रियाओं में शारीरिक गतिशीलता होती है, जो बच्चे के शरीर को क्रियाशील रखते हुए उनमें लचीलापन समन्वय, संतुलनएवं नियंत्रण को बढ़ाती हैं।

14. स्मरण शक्ति में वृद्धि

नाटक की क्रियाओं के पूर्वाभ्यास एवं पुनराभ्यास के दौरान बालक को शब्द, भाव भंगितायें, शारीरिक स्थिति आदि सभी का स्मरण रखना होता है एवं उन्हें बार बार दुहराना होता है। जो बच्चे की स्मरण शक्ति बढ़ाने में मददगार है।

15. समाजिक रूप से जागरूक बनना

नाटक की क्रियायें, यथा कहानी, कवितायें, दंत कथाएं, खेल आदि बालक को विभिन्न सामाजिक आयामों, समस्याओं, संस्कृतियां के बीच के द्वंद्व आदि के बारे में सिखा देती है जो बच्चों की सामाजिक, सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाने एवं उन्हें सझने में उनकी मदद करती है।

16. सौन्दर्य बोध में वृद्धि

नाटक में भाग लेना एवं नाटक देखना दोनों ही क्रियायें बच्चों में आलोचनात्मक चिंतन एवं उनके सौंदर्य बोध को बढ़ाती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नाट्य शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

4. नाट्य शिक्षा की कक्षा के आयोजन के प्रमुख तत्व

4.1 शिक्षकों से:

यह मार्गदर्शिका सिर्फ आपके मार्गदर्शन के लिए है। प्रत्येक कक्षा अपने आप में अद्वितीय होती है जिसका नेतृत्व शिक्षक के हाथ में होता है। न तो नाटकों के लिए और न ही किस दृश्य कलाओं के लिए कोई निश्चित कार्य कलाप प्रस्तावित है। आपसे अपेक्षित है कि आप दिए गए उदाहरणों के आधार पर नवीन कार्य कलापों का सृजन करें और बच्चों की आयु, सामाजिक आर्थिक स्थिति, उनकी संस्कृति, उनकी रूचि के आधार पर नवीन क्रियाकलापों का चयन करें। ध्यान रखिये कि कला किसी सीमा में नहीं बंध कर रहती है तथा साथ ही कला का आनंद तभी है जब उसमे स्वतंत्रता शामिल है। बच्चों को अपेक्षित स्वतंत्रता दीजिये ताकि उनकी कला को उसके संपूर्ण रूप में प्रस्फुटित होने का मौका मिले। बच्चों के लिए इस किताब में दी गयी लगभग सभी गतिविधियां प्रायः प्राथमिक एवं निम्न माध्यमिक स्तर के बालकों को ध्यान में रखकर दी गयी है जिसमे आप आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं, या कोई नवीन गतिविधि भी प्रयोग कर सकते हैं। विभिन्न क्रिया कलापों की बच्चों के लिये उपयुक्तता अन्य कारकों को भी प्रभावित करती है। इन कारकों में कुछ प्रमुख करक हैं कला विशेष में उनका पूर्वानुभव, उनका कक्षा का वातावरण, कला विशेष के प्रति उस समाज एवं समुदाय का दृष्टीकोण आदि। वस्तुतः शिक्षक यह तय करने के लिये सबसे उपयुक्त होता है कि उनकी कक्षा को ये कारक कैसे प्रभावित करते हैं। इसलिये, इस किताब में सुझाई गयी गतिविधियाँ एवं उनके उम्र और स्तर केवल मार्गदर्शन के लिये हैं।

यह मार्गदर्शिका सभी स्तर के शिक्षकों के लिये है जिन्हें नाटक को अपने शिक्षण के एक अतिरिक्त आयाम के रूप में शामिल करने या विकसित करने में रुचि है। यह मार्गदर्शिका शिक्षकों को प्रारंभिक स्तर की प्रायोगिक गतिविधियां सुझाती हैं, जिन्होंने इससे पहले अपनी कक्षाओं में नाटक का कभी इस्तेमाल नही किया है। इसके अलावा इसमें उन लोगों के लिये, जो नाट्यकला को अपनी शिक्षा के अभिन्न हिस्से के रूप में इस्तेमाल करने के प्रति ज्यादा आश्वस्त हो या जो सत्र के अंत में होने वाले कार्यक्रमों जैसे किसी प्रदर्शन की तैयारी करना चाहते हों, उनके लिए भी महत्त्वपूर्ण है। इस किताब का लक्ष्य कक्षा में नाट्य कला एवं चित्रकला के कक्षा कक्ष में प्रभावी प्रयोग से सम्बंधित मार्गदर्शन से है जिसमे आपके प्रत्युत्पन्नमति का योगदान भी होगा ताकि शिक्षक कक्षा कक्ष की परिस्थितियों के अनुसार उपयुक क्रियाकलापों को विकसित कर सकें।

4.2 नाटक की गतिविधियों का उपयोग क्यों करें?

नाटक का तात्पर्य सिर्फ उसका उत्पाद (प्रदर्शन) ही नही होता, बल्कि यह सतत अधिगम की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। नाटक और नाटक की विभिन्न गतिविधियों के इस्तेमाल का भाषा सीखने में निश्चित लाभ तो मिलता ही है साथ ही इससे बच्चों को मौका मिलता है कि वे सीमित भाषा के साथ, अमौखिक संवाद-साधनों, जैसे कि शारीरिक गतिविधियों और चेहरे के हाव-भावों का

इस्तेमाल करते हुए अपनी बात को संप्रेषित कर सकें। इसके अलावा ऐसे बहुत से अन्य कारक भी हैं जो नाटक को संपूर्ण अधिगम में एक बहुत सशक्त उपकरण बनाते हैं। उदहारण स्वरुप आपने प्राथमिक कक्षाओं में देखा होगा कि कक्षा में पढ़ने की बजाए लयबद्ध एवं सस्वर गिनती / कवितायेँ आदि छात्रों को अपेक्षाकृत जल्दी स्मरण हो जाती हैं। नाटक के माध्यम से अधिगम की योजना बनाने से पूर्व आप निम्नांकित बातों पर विचार करें एवं उसकी विस्तृत योजना बनाइये ताकि आप आपने शिक्षण लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें:

नाटक से पूर्व

4.3 नाटक का कोई भी कार्यकलाप आरम्भ करने से पूर्व बच्चों का उत्साहवर्धन करें:

आप से अनुरोध है कि नाटक का कोई भी कार्यकलाप आरम्भ करने से पूर्व बच्चों का उत्साहवर्धन करें। वास्तव में किसी पाठ का नाटकीकरण अत्यंत उत्साहवर्धक होता है और बालकों को इसे पूरा करने में आनंद आता है। इसके अलावा, एक ही गतिविधि एक ही समय पर विभिन्न स्तरों पर की जा सकती है। नाटक का प्रदर्शन प्रतिभागियों को स्पष्ट रहता है, इसलिये वे आश्वस्त महसूस करते हैं और उनके पास पाने के लिये एक लक्ष्य होता है। यदि बच्चों को आरंभ मही यह पता हो कि उनके एक या दो समूहों से उनके द्वारा तैयार किये गये नाटक को मंचित करने के लिये कहा जायेगा या कि उनका वीडियो बनाया जा रहा हो, या उन्हें किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में शामिल किया जा रहा हो तब उनका नाटक के प्रति उत्साह दुगुना हो जायेगा।

4.4 छात्रों की उम्र केअनुसार परिचित गतिविधियों को चुनें

नाटकीकरण छोटी उम्र से बच्चों के जीवन का अभिन्न अंग होता। बच्चे लगभग तीन या चार साल की उम्र से दृश्यों और कहानियों का अभिनय करने लगते है वे खरीदारी करने या फिर डॉक्टर के पास जाने जैसी उन स्थितियों में वयस्कों का अभिनय करते हैं, जो उनकी जिंदगियों का हिस्सा होती हैं।रोजमर्रा के जीवन में ऐसी कई संभावित स्थितियाँ होती हैं। बच्चे कई बार दूसरों की नक़ल / निरिक्षण करते हुए (रोल प्ले) करते हुए अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। वे उस स्थिति की भाषा और पटकथा का अभ्यास करते हैं और उसमें शामिल भावों को अनुभव करते हैं, यह जानते हुए कि वे जब चाहें तो वास्तविकता में लौट सकते हैं।ऐसे स्वांग बच्चों को उनकी जिंदगी में आगे आने वाली वास्तविक परिस्थितियों के लिये तैयार करते हैं। यह वास्तविक जीवन का पूर्वाभ्यास है। इस तरह के स्वांग उनकी सृजनात्मकता को बढ़ावा देते हैं और उनकी कल्पनाशीलता को विकसित करते हैं और साथ ही उस भाषा को इस्तेमाल करने का मौका देते हैं, जो उनकी रोजमर्रा की जरूरतों से बाहर की होती है। आप उनसे पंचतंत्र का बंदर या खरगोश या बुद्धु शेर, अलादीन का जादुई कालीन, या एक डाकू होने के लिये कह सकते हैं, और फिर उस व्यक्तित्व या भूमिका को विकसित करने वाली उपयुक्त भाषा का उपयोग कर सकते हैं।

4.5 नाट्य क्रिया के सन्दर्भ में आरम्भ हमेशा अल्प समयावधि के नाटकों से करें

छोटे -छोटे चरणों के साथ अपनी कक्षा में नाटक से बच्चों का परिचय कराएं जो सरल हों। उदहारण के लिए किसी दानव की नकल करो, आपने किसी रोल मॉडल की नक़ल करो, बन्दर की भालू की नक़ल करो आदि और फिर जैसे-जैसे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता जाये आल्पिनयंत्रण युक्त गतिविधियों जैसे- नाटक की ओर बढ़ें। नाटक सिखाने के क्रम में हो सकता है कि आपको उन्हें साधारण सी चीजें जैसे-अपने हाथों को फैलाना, छोटे और बड़े कदम लेना, मनोभावों को प्रदर्शित करने के लिये अपने चेहरे और पूरे शरीर का इस्तेमाल करना, विभिन्न मुख्मुद्राएँ, विभिन्न भाव भंगिमाएं आदि भी सिखानी पड़ सकती है। बच्चों का भाषा के प्रति अपने शारीरिक अभिव्यक्ति अभिनय की तरफ पहला कदम है। बच्चों को अक्सर यह आभास नही होता कि वे चीजों को अलग-अलग ढंग से कह सकते हैं। उनसे शब्दों या वाक्यों को जोर से, धीमे से, क्रोधी स्वर में या दुखी स्वर में बोलने के लिये कहना भी उनके लिये आवाज के उतार चढाव के द्वारा विभिन्न प्रकार की भावाभिव्यक्ति सिखाने का अच्छा तरीका हो सकता है।

4.6 बच्चों के आयु वर्ग के संज्ञानात्मक, शारीरिक एवं भावनात्मक विकास को ध्यान में रखते हुए नाटक के विषय का चयन करें

- पूर्व प्राथमिक स्तर: पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चे सामान्यतः रंगों की पहचान, अंकों की पहचान होती है एवं भाषा वाक्यांशों के रूप में बोल भी लेते हैं और समझ भी लेते हैं परन्तु उनमें भाषा का सक्रिय इस्तेमाल बहुत सीमित होता है अतः इस स्तर पर करायी जानेवाली नाट्य क्रियाएं शाब्दिक कम और शारीरिक क्रियाओं वाली ज्यादा होनी चाहिए साथ ही नाटक का विषय उनके तात्कालिक आस पास के वातावरण से जुड़ा होना चाहिए।
- प्राथमिक स्तर के बच्चे पूर्व प्राथमिक बालकों की तुलना में भाषा का इस्तेमाल ज्यादा सक्रिय रूप से कर सकते हैं और सरल वाक्य व प्रश्न बना पाते हैं। उनके पास ज्यादा बड़ी शब्दावली होती है। उदाहरण के लिये, कपड़े, दुकानें, शरीर के अंग, रोजमर्रा में इस्तेमाल होने वाली क्रियाएं और समय बता पाना आदि क्रियाएं वे कर सकते हैं अतः उनके लिए नाट्य क्रियाओं में तदनुसार विभिन्न कार्य कलाप समाहित किये जाने चाहिए
- पूर्व-माध्यमिक स्तर के बच्चे वाक्यों की संरचन को पहचानने और अपनी खुद की भाषा रचने में ज्यादा सक्षम हो जाते हैं। वे सामान्य भूतकाल, तुलनात्मक शब्द तथा आभार, निवेदन या सुझाव व्यक्त करने जैसे भाषायी बारीकियों को सीखने के लिये तैयार होते हैं। साथ ही इस स्तर पर उन्हें विभिन्न विषयों का ज्ञान भी होने लगता है और सामाजिक रूप से स्वीकृत एवं सामाजिक रूप से अस्वीकृत व्यवहार भी उन्हें समझ में आने लगता है। इस स्तर पर विभिन्न विषयों के महत्व, विभिन्न महापुरुषों की जीवनी विभिन्न नैतिक आदर्शों से

जुडी कहानियां, वातावरण के विभिन्न अवयव आदि से सम्बंधित नाटकों को चुना जा सकता है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इन स्तरों को उम्र के वर्षों से जोड़कर न देखा जाये क्योंकि आरंभिक वर्षों में बच्चे बहुत तीव्रता से सीखते हैं और एक वर्ष जैसे कम समय में भी उसकी क्षमता में बहुत फर्क आ जाता है। थोड़ा बड़ा बच्चा एक ही साल में दूसरे स्तर पर पहुंच सकता है, जबकि छोटे बच्चों को धीरे-धीरे आगे बढ़ना होता है।

4.7 आप स्वयं बच्चों के लिए संरचित नाटकों में सक्रीय रूप से भागीदार बनें:

शिक्षक यदि नाट्य कला सिखाते हुए छात्रों के क्रिया कलापों में सक्रीय रूप से भागीदार नहीं रहता हो अथवा उर्जावान नहीं बना रहता हो तो छात्रों की उसके प्रति रुचि कम हो सकती है अतः बच्चों को यह महसूस होना जरूरी है कि आपके भीतर प्रस्तावित नाटक एवं नाटकीकरण के प्रति जोश है और आप अपने द्वारा प्रस्तावित गतिविधियों को बच्चों के साथ करने में आनंद का अनुभव करते हैं आपकी सक्रीय भागीदारी एवं आपका उर्जावान बने रहना उनके लिये एक प्रारूप या आदर्श की तरह काम करता है और उन्हें कक्षा में सक्रिय रहने के लिए प्रोत्साहित करता है।

4.8 बालकों की रुचि का विशेष ध्यान रखें:

सभी बच्चे नाटक के सभी क्रियाकलापों न अच्छे हो सकते हैं और न ही उनकी रूचि हो सकती है। ऐसे में यह आवश्यक है कि आप छात्रों की रूचि एवं उनकी एक विशेष भूमिका के लिए उनकी योग्यता का ध्यान अवश्य रखें। जैसे हो सकता कि किसी बच्चे की अभिनय में रुचि न हो पर उसका मंच का सञ्चालन कौशल अथवा मंच की साज सज्जा का कौशल अच्छा हो, ऐसे में आप उसे कोई अन्य कार्य देने की बजाए अच्छा हो यदि उसकी रूचि का कार्य सौंपें एवं उस कार्य विशेष में आपनी प्रतिभा दिखने का मौका दें। किसी भूमिका को निभाने में बच्चे अपनी रोजमर्रा की पहचान से बाहर निकल सकते हैं और अपने संकोच से छुटकारा पा सकते हैं। यह उन बच्चों के लिये उपयोगी होता है, जो सामूहिक गतिविधियों में शामिल होने से बचते हैं। यदि आप उन्हें कोई विशिष्ट भूमिका दे दें, तो उससे उन्हें उस चरित्र को अपनाने का और अपने सामाजिक भय (Social Anxiety/ Phobia) को तोड़ने का प्रोत्साहन मिलता है। शिक्षक नाटक की विभिन्न भूमिकाओं का उपयोग उन बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिये कर सकते हैं, जो कक्षा में संकोची होते हैं और खुद को हमेशा पीछे रखते हैं साथ ही उन बच्चों पर नियंत्रण रखने के लिये भी कर सकते हैं जो कक्षाओं में समस्यात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते है या जिनका सामाजिक समायोजन उपयुक्त नहीं है या जो अन्य बच्चों को परेशान करते हैं।

4.9 नाटक की क्रिया के दौरान छात्रों की व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार की जिम्मेदारियां तय करें:

एक नाटक में कई प्रकार की क्रियाएं शामिल होती हैं जिसमे से कुछ व्यक्तिगत होती हैं। बच्चों को उनकी योग्यता के अनुसार व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार की गतिविधियों में शामिल करें और उनकी दोनों प्रकार की जिम्मेदारियों को सुनिश्चित करें। नाटक की विभिन्न क्रियाओं के दौरान बच्चों को एक सामूहिक निर्णय लेना पड़ता हैं, एक-दूसरे की बातें सुननी पड़ती है और एक-दूसरे के सुझावों को महत्व देना पड़ता है। अपने लक्ष्यों को पुरा करने के लिये उनका पारस्परिक सहयोग जरूरी होता है, उन्हें अपने मतभेदों को दूर करने के तरीके ढूंढ़ना होते हैं और समूह के प्रत्येक सदस्य के मजबूत पहलुओं का उपयोग करना होता है जो उनका सामाजिक समायोजन बढ़ाता है, उनका दूसरों का दृष्टिकोण समझने की क्षमता का विकास करता है और व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने में उनकी मदद करता है।

4.10 भाषा का आत्मीयकरण करने का प्रयास करें

यदि संभव हो तो नाटक की शाब्दिक भाषा स्थानीय भाषा को चुनें। स्थानीय भाषा के प्रयोग से बच्च सहजता महसूस करेंगे और नाटक प्राकृतिक लगेगा । नाटकीकरण बच्चों को यह मौका देता है कि वे उनके द्वारा पढ़े गये या सुने गये किसी पाठ में कोई भावना या व्यक्तित्व जोड़ सकें। कोइ भी शब्द, वाक्य या लघु संवाद (दो से चार लाइनों का) लें, और बच्चों से उसे चरित्र में की गहराई में जाकर उपयुक्त स्वर एवं भाव बह्गिमाओं के साथ उसका अभ्यास करने को कहें। उदहारण के लिए इस सरल प्रश्न 'तुम्हारा नाम क्या है' का मतलब भी उसको कहने के ढंग और भाव भंगिमाओं से, नाटक की परिस्थिति की मांग के अनुसार अलग अलग अर्थ एवं अभिव्यक्ति हो सकती है। आप सोच कर देखिये कि एक लड़का किसी नए लड़के से दोस्ती करना चाहता है तो यह प्रश्न कैसे पूछेगा? सोचिये कि यही प्रश्न एक संदेहास्पद से दिकने वाले व्यक्ति से कैसे पुछा जायेगा और इसी सवाल को कोई अच्छा कम करने वाले बच्चे से शिक्षक कैसे पूछेगा? यह अभ्यास बच्चों को यह समझने मदद करेगी कि भाषा, वक्ता के स्वर और परिस्थितियों पर कैसे निर्भर करती है।

4.11 बहु-विषयी सामग्री का चयन करें

नाटक को इस्तेमाल करते समय आपके लक्ष्य बहुविषयी होना चाहिए। आप अन्य विषयों से लिए गए तथ्यों एवं संकल्पनाओं को आपने नाटक में सम्मिलित कर सकते हैं जो आपके नाटक को और प्रभावी बना देगा। जैसे बच्चों को विभिन्न ऐतिहासिक दृश्यों का अभिनय करने को कहा जा सकता है या फिर किसी जीव के जीवन चक्र का अभिनय कर सकते हैं, किसी संस्कृति विशेष के पहनावे और विभिन्न रीति रिवाजों की नक़ल कर सकते हैं । आप 21वीं सदी के विभिन्न ज्वलंत मुद्दे जैसे लैंगिक भेदभाव, पर्यावरण , सड़कों सुरक्षा, बाल एवं मानवाधिकार परिस्थिति विशेष के नैतिक मूल्यों आदि पर भी प्रभावी नाट्य मंचन कर सकते हैं। प्रहसनों और स्वांगों के द्वारा महत्वपूर्ण संदेशों

का संप्रेषण किया जा सकता है और उनकी पड़ताल की जा सकती है। किसी संदर्भ के साथ नाट्य कला का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार के मानवीय व्यवहारों पर काम करने के लिये भी किया जा सकता है।

4.12 नाटक की गति एवं उसके छात्र केन्द्रित होने का ध्यान रखें

नाटक कक्षा की गति छात्रों की मनोदशा में बदलाव ला सकता है। नाटकीकरण विद्यार्थी-केन्द्रित होना चाहिए ताकि आप उसका इस्तेमाल अपने पाठ के शिक्षक-केन्द्रित भागों से अंतरसम्बन्ध स्थापित करने के लिये कर सकें। यह एकसक्रिय गतिविधि है, इसलिये आप इसका उपयोग शांतिपूर्वक किये जाने वाले किये जाने वाले वैयक्तिक कार्य के बाद कक्षा को अधिक जीवंत बनाने के लिये कर सकते हैं।

4.13 उपयुक्त विषयों एवं गतिविधियों का चयन करें

शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को उन्नत बनाने के लिए नाटक हेतु उपयुक्त विषय एवं गतिविधि चुनें। जब आप किसी नाटक सम्बंधी गतिविधि की योजना बनाते हैं तो आपको अपना लक्ष्य पता होना चाहिये। कुछ गतिविधियां सटीकता और प्रवाह पैदा करने वाले कामों के लिये हो सकती हैं और कुछ भाषायी कौशल का अभ्यास करने के लिये। आपका लक्ष्य पिछले पाठों को दोहराना या उसका अभ्यास कराना भी हो सकता है या फिर आपका लक्ष्य पाठ की गति को बदलना हो सकता है। उदेश्यों से तारतम्यता रकने वाले गतिविधियों को चुनें।

4.14 कक्षा को व्यवस्थित करें

नाटक एवं उसके पूर्वाभ्यास के दौरान कक्षा को उसके अनुरूप व्यवस्थित करना न भूलें। स्थान को बाधा मुक्त रखें। यदि कुर्सिओं मेजों को हटाने की जरुरत हो तो बेसक उन्हें या तो कक्षा में एक किनारे कर दें या बाहर कर दें। प्रदर्शन कला की अधिकांश गतिविधियाँ बच्चे खड़े रहकर करते हैं और आमतौर पर कक्षा की सामने वाली जगह पर्याप्त होती है। यदि बच्चे गोले में खड़े हों या समूहों में काम कर रहे हों तो आपको ज्यादा जगह की जरूरत होगी। टेबल और कुर्सियों को कक्षा के एक कोने में सरका दें या फिर बच्चों को बाहर किस विद्यालय के ऑडिटोरियम या कॉमन हॉल में उपयुक्त व्यवस्था करें।

4.15 प्रतिक्रिया (फीडबैक) दें

फीडबैक देते समय ध्यान रखें कि आप नाट्य कला का कोई किन्ही व्यावसायिक प्रशिक्षण नही दे रहे हैं बल्कि बच्चों को के प्रभावी अधिगम के लिए सिर्फ नाट्य कला का इस्तेमाल कर रहे हैं और बच्चों को अधिगम का एक रोचक तरीका सिखा रहे हैं। बच्चों के द्वारा किये गए कार्य, नाटक की पूरी प्रक्रिया,नाटक की तयारी से लेकर आखिर तक का उनका आपसी सहयोग, उनके द्वारा लिए गए निर्णय , उनके संवाद एवं नाटक के मंचन के दौरान उनका आपसी समन्वय इस सबका विश्लेषण करते हुए अपनी प्रतिक्रिया दें। किये हुए हर अच्छे कार्य को प्रोत्साहित करें एवं उसकी प्रशंसा करें

इसके लिए आपको चाहिए कि जब बच्चे गतिविधि में संलग्न हों तो उन्हें ध्यान से देखें और सुनें, दखल न देने की कोशिश करें और जो आप देखें उसके नोट्स बनाते जाएं। जब वे अपना काम खत्म कर लें, तो आप कुछ समूहों से अपना काम दिखाने को कह सकते हैं और फिर उन्हें अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं। ऐसा करने के कई तरीके हो सकते हैं। आप उनके करने के लिये एक प्रतिक्रिया शीट तैयार कर सकते हैं और उसका उपयोग कर सकते हैं। आप एक प्रश्नावली के द्वारा (यदि संभव हो तो) दर्शकों की प्रतिक्रिया भी ले सकते हैं । कुछ भी नकारात्मक दिखे तो उसकी सकारात्मक शब्दों में आलोचना करें यदि रचनात्मक प्रतिक्रिया नाटकीकरण की गतिविधियों का नियमित हिस्सा बन जाए, तो बच्चे धीरे-धीरे नाटकीकरण की अपनी क्षमताओं और अपनी भाषा में सुधार कर लेंगे और साथ ही अपने दैनिक जीवन में भी रचनात्मक आलोचना सुनने और आपने में उन कमिओं को दूर करने के अभ्यस्त हो जायेंगे।

5. नाट्य शिक्षा के विभिन्न कार्य कलापों के उदहारण**:

(**नाट्य कला की एक कक्षा के आयोजन की योजना के निम्नांकित चार उदहारण राज्य शिक्षण प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान संसथान, रायपुर छत्तीसगढ़ द्वार डी.एड. (दूरस्थ शिक्षा) के स्व अधिगम सामग्री से साभार उद्धृत है। इस प्रकार की अन्य क्रियाकलापों की जानकारी के लिए देखें: http://www.scert.cg.gov.in/pdf/dedfirst2013/kalashikshan.pdf)

निर्देशिका के इस खंड में कुछ कार्य कलापों के उदहारण आपके मार्गदर्शन के लिए दिए गए हैं जिनके आधार पर आप नाट्य क्रियाएं कर सकते हैं अथवा नवीन क्रिया का निर्माण करसकते हैं ये सभी गतिविधियां छोटी हैं, और बच्चों के स्तार्के अनुरूप हैं अतः बच्चे इन्हें करने में आनंद का अनुभव करेंगे साथ ही इन्हें आयोजित करना आसान है क्यों कि इनके लिए आपको किस भी प्रकार की विशेष व्यवस्था या सामग्री की आवश्यकता नहीं होगी।

यदि आप इस प्रकार की गतिविधियों का अपनी कक्षाओं के दौरान उपयुक्त प्रयोग करेंगे तो बच्चे नाटकीकरण की प्रक्रिया के साथ सहज महसूस करने लगेंगे।

5.1 गतिविधि 1

राक्षस की नकल करो

इस गतिविधि को अल्प समय के लिए सभी स्तर के बालकों को कराया जा सकता है

उद्देश्य:

- शारीरिक अंगों की शब्दावली और ब्यौरे के लिये सुनना।
- समूह में समन्वय के साथ काम करना या शारीरिक संयोजन पर काम करना।

पूर्व तैयारी: दानवों के विवरणों को तैयार करें। उदाहरण के लिये दस सिर बीस आँखें, दो हाथ आदि का रावण बना सकते हैं। रावण का नाम लेने का उद्देश्य यह है कि बहुत संभव है कि बच्चों को इसकी जानकारी हो।

कक्षा में शिक्षक की भूमिका

- शरीर के उन विभिन्न अंगों की ओर इशारा करें जिनका आप उपयोग करने जा रहे हों और यह देखने के लिये कि बच्चे उनसे परिचित हैं कि नही उनसे उनके नाम बोलने को कहें।
- दो इच्छुक बच्चों से कक्षा के आगे आकर खड़े होने को कहें। उन्हें समझाएं कि उन्हें आपके निर्देशानुसार राक्षस बनाने के लिये इनको मिलकर काम करना होगा।
- राक्षस का विवरण बताएं और इन बच्चों की मदद करें ताकि वे अपने हाथों, पैरों और शरीर के दूसरे अंगों से उसे बना पाएं। कक्षा से टिप्पणियां मांगें और सकारात्मक प्रतिक्रिया दें जिससे दूसरे बच्चों को मदद मिलेगी
- पूरी कक्षा के साथ यह प्रक्रिया दोहराएं।
- उन समूहों पर पर ध्यान दें जिन्होंने रोचक दानव बनाए हैं। उनसे अपने दानवों को पूरी कक्षा को दिखाने को कहें।

बाद की गतिविधि- बच्चों से राक्षसों के चित्र बनाने को कहें और एक चित्र प्रदर्शनी या एक राक्षस सूची बनाएं।

5.2 गतिविधि 2

इस गतिविधि को अल्प समय के लिए सभी स्तर के बालकों को कराया जा सकता है परन्तु प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए ज्यादा उपयुक्त हो सकता है

उद्देश्य:

- पाठ्यपुस्तक के वाक्यांशों को दोहराना।
- बच्चों को समूह में काम करने के लिये प्रोत्साहित करना, संयोजन पर काम करना और बच्चों को प्रेरित करना कि वे पाठ्यपुस्तक में से भाषा को दोहराएं।

सामग्री- आपकी पाठ्यपुस्तक।

तैयारी- पाठयपुस्तक के किसी यादगार दृश्य पर एक सरल स्वांग की तैयारी करें।

कक्षा में

- बच्चों से उनकी किताब के चरित्रों के नाम पूछे जैसे पशुओं के इत्यादि।

- बच्चों को अपना स्वांग दिखाएं। उनसे पूछें कि क्या वे पहचाने कि आप कौन हैं। क्या वे यह याद कर पाते हैं कि वह चरित्र उस समय क्या कह रहा था।
- बच्चों को बता दें कि उन्हें किताब में से एक स्वांग तैयार करने के लिये जोड़ों में काम करना होगा। उन्हें जोडों में या तिकड़ियों में बांट दें और उन्हें समय दें ताकि वे किताब को फिर देख जाएं, उसमें से एक दृश्य चुनें, और फिर उसे तैयार करें। यह जरूरी नही कि दृश्य स्थिर हो, वे उसमें गतिविधि कर सकते हैं।
- जब अधिकांश जोड़ें तैयार हों, तो तैयारी को रोक दें और कुछ समूहों से अपना दृश्य दिखाने को कहें। दूसरे बच्चों को यह अनुमान लगाना होगा कि वे कौन हैं और उनके चरित्र क्या कह रहे हैं। बाद की गतिविधि आप या कोई बच्चा इन दृश्यों की तस्वीर ले सकते हैं। बच्चे इन तस्वीरों में कथनों के गोले बना सकते हैं और फिर उन्हें दीवार पर प्रदर्शित कर सकते हैं।

5.3 गतिविधि 3

लिखे हुए शब्द से निरुपित वस्तु को पहचानो और उसकी तस्वीर बनाओ

उद्देश्य

- शब्दावली को दोहराना।
- बच्चों को जोड़ो में मिलकर काम करने के लिये प्रोत्साहित करना
- कल्पनाशक्ति और सृजनशीलताको प्रेरित करना और
- शारीरिक संयोजन पर काम करना।

वर्णन- बच्चे समूह में काम करते हुए किसी शब्द-परिवार में से किसी एक ऐसे शब्द का स्वांग करेंगे जिस पर उन्होंने काम किया हो। उदाहरण के लिये पेंसिल, पेन और पेंसिल बॉक्स। वे इसे बाकी कक्षा को दिखाते हैं जिन्हें अनुमान लगाना होता है कि वह क्या है।

कक्षा में

- बच्चों को शब्द-परिवारों के विचार से परिचित कराएं। आप बच्चों से पूछ सकते हैं कि वे उन विषयों के बारे में बताएं जिन पर वे हाल में काम कर रहे थे और उनसे वे शब्द बताने को कहें जिन्हें वे उन विषयों से जोड़ कर देखते हैं। उदाहरण के लिये- कार, ट्रेन, और एक बस। इसके अलावा, आप प्रत्येक विषय से कुछ शब्द लिख सकते हैं और फिर बच्चों से उन शब्दों को विभिन्न शाब्दिक परिवारों में रखने के लिये कहें और उनसे उनके वर्गीकरण का कारण पूछें।
- बोर्ड पर लिखे इन शब्द परिवारों में से किसी एक परिवार में से एक शब्द चुनें। बच्चों से कहें कि किसी एक शब्द को प्रदर्शित करने वाली मूर्ति बनने जा रहे हैं

और उन्हें वह परिवार बता दें जहाँ से आपने वह शब्द लिया है। उस शब्द का स्वांग करें और बच्चों से अनुमान लगवाएं कि वह शब्द कौन सा है।

- बच्चों को जोड़ों में बांट दें। उनसे बोर्ड पर लिखे शब्द परिवारों में से किसी एक परिवार में से एक शब्द चुनने को कहें।
- बच्चों की आवश्यकतानुसार मदद करें व उनको प्रोत्साहित करें।
- अब तैयारी को रोक दें। जोड़ों से आपना चित्र कक्षा के समक्ष दिखाने को कहें और फिर वे लोग अनुमान लगाएं कि वह क्या है। यदि कोई बच्चे अपनी मूर्ति दिखाने के लिए बिलकुल अनिच्छुक हों, तो उनके साथ जबरदस्ती न करें।
- बदलाव- बच्चे आपने चित्र बनाने के लिये समूह में भी काम कर सकते हैं।

5.4 गतिविधि 4

सुनो और स्वांग करो

उद्देश्य:

किसी कहानी को सुनना और खास शब्दों और वाक्यांशों पर ध्यान देना।

किसी कहानी का चित्रण करने के लिए शारीरिक गतिविधियों का उपयोग करना।

वर्णन-बच्चे कोई कहानी सुनते हैं, और विभिन्न शब्दों को सुनने पर अलग-अलग शारीरिक गतिविधि करतेहैं।

सामग्री-एक कहानी, उदाहरण के लिये, विशाल हाथी की कहानी।

पूर्व तैयारी:

- एक कहानी चुनें और उसकी एक रूपरेखा लिख लें।
- इसे कहने का अभ्यास करें, संभव हो तो किसी साथी को सुनाएँ।
- कहानी से कुछ अहम शब्द चुनें और इन शब्दों का चित्रण करने वाली शारीरिक भंगिमाओं के बारे में सोचें।
- ये शारीरिक भंगिमाएं करते हुए कहानी कहने का अभ्यास करें।

कक्षा में

कहानी के पहले

- बच्चों को बता दें कि आप उन्हें एक कहानी सुनाने वाले हैं, पर उन्हें पहले कुछ भंगिमाएं सीखनी पड़ेगी।
- बच्चों से खड़े होने को कहें, संभव हो तो एक गोले में खड़ा करवाएं। गोले में उनके साथ खड़े हो जाएं उन्हें दो या तीन शब्द और भंगिमाएं सिखाते हुए शुरुआत करें।

फिर बदले हुए क्रम में इन्हें शब्दों को दोहराएं और बच्चों से संबद्ध भंगिमाएं करवाएं (बच्चों को शब्दों को कहने की जरूरत नहीं है)।

- कुछ और शब्द और भंगिमाएं सिखाएं। बच्चों से इन नये शब्दों से जुड़ी भंगिमाएं और पिछले शब्दों की भंगिमाएं एक साथ करवाएं। एक-एक करके कुछ और शब्द और भंगिमाएं सिखाते जाएं जब तक कि आप उन सबका प्रदर्शन और अभ्यास न कर लें।

उदाहरण-

स्वांग के लिये शब्द भंगिमाएँ

- विशाल- अपने सिर के ऊपर से शुरू करते हुए अपने हाथों से एक विशाल गोला बनाएं।
- हाथी- हाथी की सूंड के माफिक अपनी नाक के सामने एक हाथ हिलाएं।
- ऊब- हाथ पर सिर टिकाकर बैठ जाएं और चेहरे पर बोरियत का भाव हो।
- नया विचार- चेहरे पर अचानक आये खुशी के भाव के साथ अपने सिर की ओर इशारा करें।
- चलना- उस स्थान पर कुछ कदम चलें।
- शहर- दोनों हाथ सिर के ऊपर करें जो गगनचुंबी इमारत का इशारा होंगे।
- किसी से मिलना- अपने बगल में खड़े किसी व्यक्ति की ओर मुड़ें और हाथ मिलाएँ।
- जादू-- अपने हाथ उठाएं और उन्हें जादुई धूल बिखेरने की तरह हवा में लहराएँ।
- बंदर- एक हाथ से अपना सिर खुजलाएँ और एक हाथ से दूसरे हाथ के नीचे वाली कांख को खुजलाएं।
- क्या माजरा है? अपने हाथ खोल दें और प्रश्न पूछने की मुद्रा में अपने कंधे उचकाएँ।
- ठीक है (सहमत होना) स्थानीय स्तर पर सहमत होने के लिये जो भी प्रचलित शारीरिक मुद्रा हो।
- पागल- स्थानीय स्तर पर में जो भी प्रचलित शारीरिक मुद्रा हो।
- मगरमच्छ- अपने फैली हुई बाहों से खटाक से बंद होने वाले मगरमच्छ के जबड़े बनाएं।
- थकान- अपने शरीर को झुका लें।
- सोना- अपने सिर को अपने दोनों हाथों में रख दें।

नाट्य शिक्षा के लिए बताई गयी उपरोक्त गतिविधियाँ सिर्फ आपके मार्गदर्शन के लिए हैं जिसके आधार पर आप आपनी कक्षा के लिए नयी गतिविधि तय कर सकते हैं

Part-B
कला शिक्षा
(Art Education)

संस्कृतियों का मूल्यांकन उनकी कला द्वारा होता है अधिकांश संस्कृतियों एवं ऐतिहासिक युगों ने बच्चों की शिक्षा में कला के महत्व को अस्वीकार नहीं किया है। कला अधिगम , ज्ञान एवं अभिव्यक्ति का एक समयानुकूल माध्यम है।

-लुइस-हेटलैंड

6. चित्रकला शिक्षण: परिभाषा एवं महत्व

6.1 कला क्या है?

जॉन डीवी (1906) के अनुसार

कोई व्यक्ति क्या कर रहा है, इसका अनुभव करना एवं उस अनुभव का आनंद उठाना, उस संगामी अन्तर्जीवन की प्रक्रिया के एक पक्ष में खो जाना और सामग्री सन्दर्भों का तदनुसार सुनियोजित विकास करना ही कला है।

जैसा कि इस निर्देशिका के आरम्भ में बताया गया कि कला, विचारों भावनाओं एवं अनुभवों की, संगीत, चित्र, भाषा, भाव भंगिमाओं एवं गति के माध्यम से एक व्यय्वस्थित अभिव्यक्ति है कलाएं बच्चों की संवेदी, भावनात्मक, बौद्धिक एवं रचनात्मक क्षमता को समृद्ध बनाती हैं और बालकों के समग्र विकास में आपना योगदान देती हैं। कला के कई प्रकार हैं जिनमे प्रदर्शन कला एवं दृश्य कला प्रमुख हैं । दृश्य कला चित्रात्मक निर्माण के द्वारा रचना एवं सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। यह एक अद्वितीय सांकेतिक क्षेत्र है एवं एक ऐसा विषय है जिसकीअपनी विशेष अपेक्षाएं एवं अधिगम हैं दृश्य कला का तात्पर्य उन कलाओं से है जो मुख्यतः दृश्य प्रत्यक्षण के लिए बनायीं जाती हैं:यथा चित्र, पेंटिंग, सजावट, रेत चित्र, मूर्ती आदि। कला शिक्षा बालकों को सम्प्रेषण के वैकल्पिक माध्यमों की खोज में मदद करती हैं। कलाएं बच्चों में व्यक्तिगत एवं नवीन विचारों को प्रोत्साहित करती हैं। दृश्य कला बच्चे को काल्पनिक जीवन एवं वास्तविक संसार के बीच स्वस्थ सम्बन्ध बनाने में एवं अपने विचारों भावनाओं एवं अनुभवों को दृश्य रूप में को नियोजित करने एवं अभिव्यक्त करने में मदद करता है। चित्रकारी, पेंटिंग आदि की रचना करते हुए बालक नए ज्ञान को पुराने अनुभवों से जोड़कर उनकी अर्थपूर्णता को समझने का प्रयास करता है। दृश्य कला शिक्षण (Visual Art

Education) खोज, अन्वेषण, प्रयोग आदि के माध्यम से बच्चे की रचनात्मकता एवं सौन्दर्यनुभव को बढाता है।

6.2 कला शिक्षा का महत्व :

1. **आवश्यकता पर आधारित (Need based)** : कला शिक्षा की विशेषता यह है कि यह व्यक्ति की आवश्यकता एवं उसके गुणों के अनुसार संरचित किया जा सकता है। यथा उन्हें परिवार, क्रोध, पहचान मित्रता आदि विशिष्ट थीमो के (जो व्यक्ति की विशिष्ट आवश्यकताओं को प्रतिविम्बित करते हैं) के अनुसार निर्धारित कर सकते हैं।
2. **बालकों हेतु मित्रवत / बाल मैत्री पूर्ण (Child Friendly)**: कला शिक्षा बच्चों को उनके विचार उनकी भावनाएं और उनके अनुभवों को मैत्रीपूर्ण रोचक तरीके से अभिव्यक्त करने में मदद करता जो आराम दायक, रोचक एवं प्रसन्नतादायक है।
3. **कला शिक्षा शब्दों की सीमा से परे है (Beyond the boundaries of words):** अल्प भाषा, सीमित शब्दावली, वाणी दोष युक्त बच्चों के लिए कलात्मक निर्माण अशाब्दिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
4. **संपूर्ण शरीर के माध्यम से अधिगम (Learning from Whole Body):** कला शिक्षा के माध्यम से बच्चे अपने एवं अन्य व्यक्तियों के बारे में विभिन्न अन्य विषयों के बारे में संपूर्ण शरीर की विभिन्न क्रियाओं के द्वारा सीखते हैं।
5. **आत्मविश्वास का निर्माण/ उत्थान (Improvement in Self Confidence):** बहुत सारे कलात्मक निर्माण के अभ्यास जो कि किसी अन्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बनाए जाते हैं वे बच्चों में स्वर, शरीर एवं रचनात्मकता के प्रयोग से आत्मविश्वास का उत्थान भी करते हैं।
6. **अचेतन की प्रक्रियाओं के उद्घाटन में सहायक (Helpful in Exploring Unconscious Thoughts):** कलात्मक निर्माण यदि सुनियोजित एवं व्यवस्थित हो तो बालक की रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करते हुए उसके अचेतन की प्रक्रियाओं, कुंठाओं आदि को समझने में अत्यंत सहायक है।
7. **समस्या समाधान में सहायक एवं परिवर्तन के लिए पूर्वाभ्यास(Rehearsal for Change)**: कला शिक्षा बालकों को समस्याओं के वैकल्पिक हल खोजने और उसकी वजह से जीवन में आने वाले परिवर्तन के लिए पूर्वाभ्यास का काम भी करता है। जैसे एक बच्चा जो कक्षा में अत्याधिक समस्याओं का सामना करता है उससे सुपर हीरो की तस्वीर जो सबकी समस्या का समाधान चुटकियों में कर देता है का चित्र / पेंटिंग बनवाया जा सकता है जो सबकी रक्षा करता है और सबकी प्रसंशा का पात्र है।

8. **मनोरंजक (Entertainment):** कला चिकित्सा की सबसे बड़ी विशेषता और सौंदर्य उसके मनोरंजक होने में है। कला शिक्षा को 'खेल विधि' के रूप में समझा जा सकता है जिसमे बिना किसी गंभीर चर्चा के बालक बहुत कुछ सीख लेता है और बहुत कुछ अभिव्यक्त कर देता है।
9. **सोचने की एवं तर्क करने की क्षमता में वृद्धि:** (Improves Tinking & Reasoning): दृश्य कला निर्माण बच्चों की सोचने एवं तर्क करने की क्षमता को बढाता है क्योंकि कोई भी दृश्य कला निर्माण में सर्वप्रथम बच्चे को उसका आउटलाइन और उसे से प्रतिविम्बित भाव सोचना होता है और तदनुसार रंग रेखाओं आदि को समायोजित करना पड़ता है।
10. **एकाग्रता को बढ़ावा** - दृश्य कला एक बड़े दर्शक समूह के सामने प्रदर्शित की जाती हैं ऐसे में एक स्तरीय दृश्य कलात्मक निर्माण में प्रतिभागियों से उच्च स्तर की एकाग्रता अपेक्षित होती है। यह एकाग्रता विचारों, रंगों, रेखाओं, विन्दुओं आदि सभी चरणों पर आवश्यक होती है बालक की यह एकाग्रता बाद के जीवन में भी विभिन कार्यों में काम आती है।
11. **सौन्दर्य बोध में वृद्धि**

    दृश्य कलात्मक निर्माण एवं उन्जे देखना एवं उनका विश्लेषण करना दोनों ही क्रियायें बच्चों में आलोचनात्मक चिंतन एवं उनके सौंदर्य बोध को बढ़ाती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि दृश्य कलाएं बालक के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

7. बच्चो में चित्रकला के विकास का चरण : लान्फेल्ड का सिद्धांत

कलात्मक विकास की अवस्था का विक्टर लान्फेल्ड का सिद्धांत:

कलात्मक विकास की अवस्थाएँ आपको कला शिक्षा के बारे में विस्तार से जानने में मदद करेंगी और इस से आपकी कला शिक्षण के कौशल उन्नत होंगे कला शिक्षा के विकासात्मक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन सर्वप्रथम डॉ विक्टर लान्फेल्ड (Dr. Viktor Lowenfeld, १९४७) ने १९४७ में प्रकाशित अपनी पुस्तक रचनात्मक एवं मानसिक विकास (Creative and Mental Growth) प्रकाशन के बाद यह पुस्तक कला शिक्षकों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन गया

आपने अद्यायनों के आधार पर लान्फेल्ड ने बताया कि कला का विकास छह स्पष्ट चरणों में होता है जिन्हें बच्चों के द्वारा निर्मित कला कृतियों के आधार पर समझा एवं स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है लान्फेल्ड के अनुसार कला विकास की छह अवस्थाएँ निम्नांकित हैं:

- अस्पष्ट लेख / घसीटने की अवस्था (१-३ साल) Scribble Stage- (1-3 years old)
- पूर्व नियोजन अवस्था (३-४ साल)Preschematic Stage-(3-4 years old)
- नियोजन अवस्था ५-६ साल The Schematic Stage-(5-6 years old)

- यथार्थ अरुणोदय की अवस्था ७-९ साल The Dawning Realism-(7-9 years old)
- छद्म प्राकृतिक अवस्था १०-१३ साल The Pseudo-Naturalistic Stage-(10-13 years old)
- निर्णय अवस्था(13-16 साल) (The Decision Stage 13-16 Years)

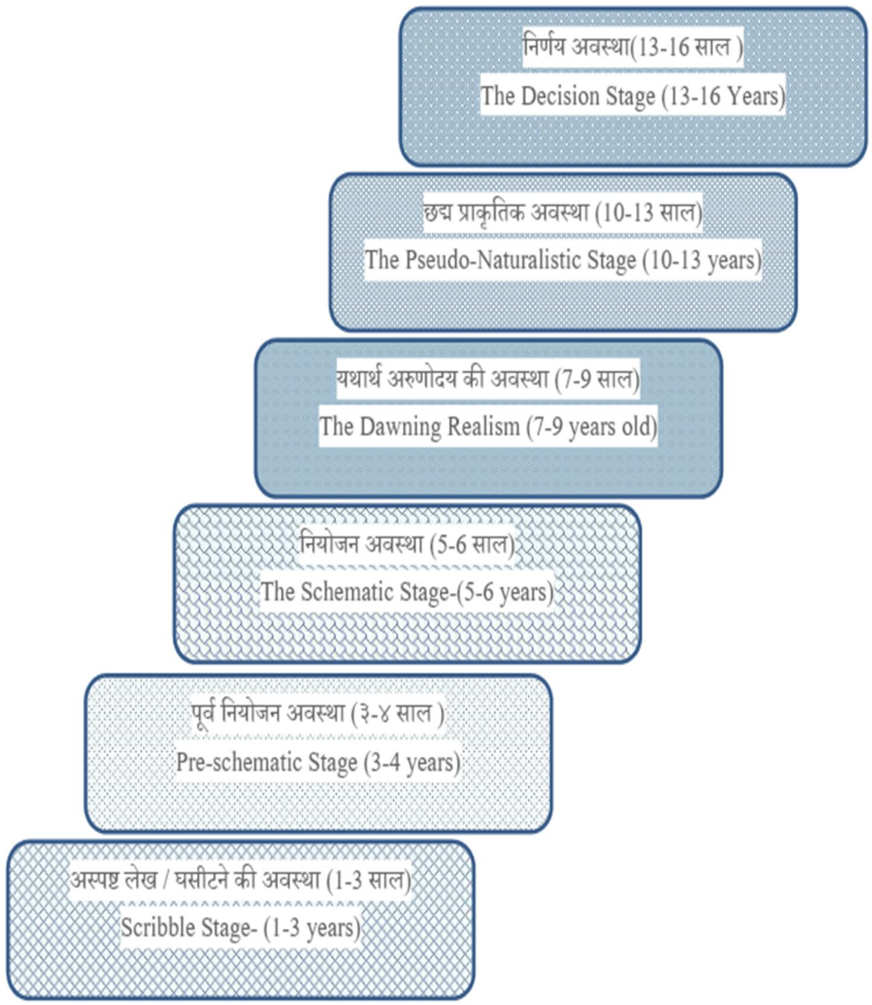

1. **अस्पष्ट लेख / घसीटने की अवस्था (१-३ साल) Scribble Stage- (1-3 years old)**

   अस्पष्ट लेखन वस्तुतः एक परिवर्तक कौशल है जिसमे मुख्यतः हाथों एवं उँगलियों का आँखों के समन्वय के साथ दक्षता पूर्ण प्रयोग शामिल है इस स्तर पर बच्चे चित्रांकन की शारीरिक क्रियाओं में संलंग्न होते हैं इस स्तर पर उनके द्वारा अंकित चिन्हों एवं विभिन्न निरूपणों न तो कोई अर्थ होता है और न ही उनमे कोई तारतम्यता होती है यह अवस्था

लगभग 3 वर्ष की आयु तक चलती है इस अवस्था के अंत तक बच्चों के घसीटने / अस्पष्ट लेखन के क्षेत्र में परिमार्जन हो जाता है आरंभिक दौर में जहाँ उनके अस्पष्ट लेखन पूरे पेज और कई बार पेज से बाहर भी चले जाते हैं, वह निर्देशित क्षेत्र विशेष पर सीमित होने लगता है यह अवस्था चित्रकला के सन्दर्भ में सिर्फ चिन्हांकन एवं आनंद प्राप्ति की अवस्था है इस अवस्था में नियंत्रित चिन्हांकन की न तो बच्चे की इच्छा होती है न उसमे इसकी क्षमता होती है दूसरे शब्दों में इस अवस्था में बच्चे चित्रांकन के लिए आवश्यक पूर्व कौशलों का अभ्यास करते हैं

चित्र 1 अस्पष्ट लेखन की अवस्था के बालक के चित्रांकन का एक उदहारण

2. **पूर्व नियोजन अवस्था (३-४ साल)Preschematic Stage-(3-4 years old)**

कलात्मक विकास के इस चरण में बच्चे आपने द्वारा उकेरी गयी आकृति एवं अपने आसपास के भौतिक वातावरण में सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम होने लगते हैं विभिन्न गोलों, रेखाओं एवं आकृतियों की व्याख्या व्यक्ति और आस पास में मौजूद विभिन्न वस्तुओं के रूप में की जा सकती है यह अर्थ पूर्ण चित्रांकन का आरम्भ होता है और इस स्तर पर बच्चा वातावरण एवं अपने चित्रांकन में सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम हो जाता है और चित्रों के माध्यम से सम्प्रेषण सीखना आरम्भ कर देता है हाथ चलाने की शुरूआत करने के बाद वह बाहर की दुनिया के आकारों से संबंध रखने वाले चित्र बनाना शुरू कर देता है। वह कुछ खास तरह के आकारों के द्वारा अपने अनुभवों को प्रकट करता है। ये आकार बच्चे के अपने अनुभव के द्वारा निर्मित, दिखनेवाली वस्तुओं के आकार होते हैं किंतु वे वस्तु के वास्तविक आकार जैसे नहीं होते। वस्तुतः इस आयु के बच्चे प्रायः आत्म केन्द्रित होते हैं और उनकी सोच भी आत्म केन्द्रित होती है इस कारण इसमें बच्चा वस्तु

को ‘जैसा जानता है’ या ‘जैसा अनुभव करता है’, वैसा चित्र बताता है; वस्तु ‘जैसी दिखती है’, वैसा नहीं। वह अपने मन में चीजों के ‘प्रतीक’ बना लेता है। उदाहरणार्थ, आदमी के चेहरे के लिए एक गोला और उसके अंदर तीन-चार छोटे-छोटे गोले (दो आंखें, एक नाक की लकीर या गोला और एक मुंह) यह उसका चेहरे का प्रतीक है इसी तरह हर चीज के प्रतीक नए-नए अनुभवों के आधार पर उसके दिमाग में बनते और बदलते रहते है। इस अवस्था के चित्र प्रतीक-प्रधान होते हैं क्योंकि बच्चा अभी तक अंतर्मुखी होता है।

चित्र 2 पूर्व नियोजन अवस्था के बालक द्वारा निर्मित एक चित्र का उदहारण

3. **नियोजन अवस्था ५-६ साल The Schematic Stage-(5-6 years old)**

इस अवस्था में बच्चों की चित्र कला में वस्तुवों एवं आकृतियों के बीच के सम्बन्ध स्पष्ट हो जाते हैं और वे चित्रों के माध्यम से सम्प्रेषण करने का प्रयास आरम्भ कर देते हैं प्रायः इस अवस्था तक बच्चे चित्र निर्माण का एक ‘स्कीमा’ (मानसिक संरचना) विकसित कर लेते हैं इस स्तर पर बच्चों के चित्रों में एक निर्धारित क्रम देखने को मिलता है उदहारण के लिए इस स्तर पर बच्चों की चित्रकारी में आकाश और धरती का स्पष्ट अंतर देकने को मिलता है आकाश प्रायः कागज की ऊपर नीले रंग में चित्रित होता है जबकि धरती कागज के नीचे हरे रंगों से वस्तुएं धरती पर रखी चित्रित की जाती हैं न कि आकाश में तैरती हुई महत्वपूर्ण वस्तुएं प्रायः बड़े आकरमें चित्रित की जाती हैं और गैर महत्व की वस्तुएं छोटे आकार में चित्रित की जाती हैं

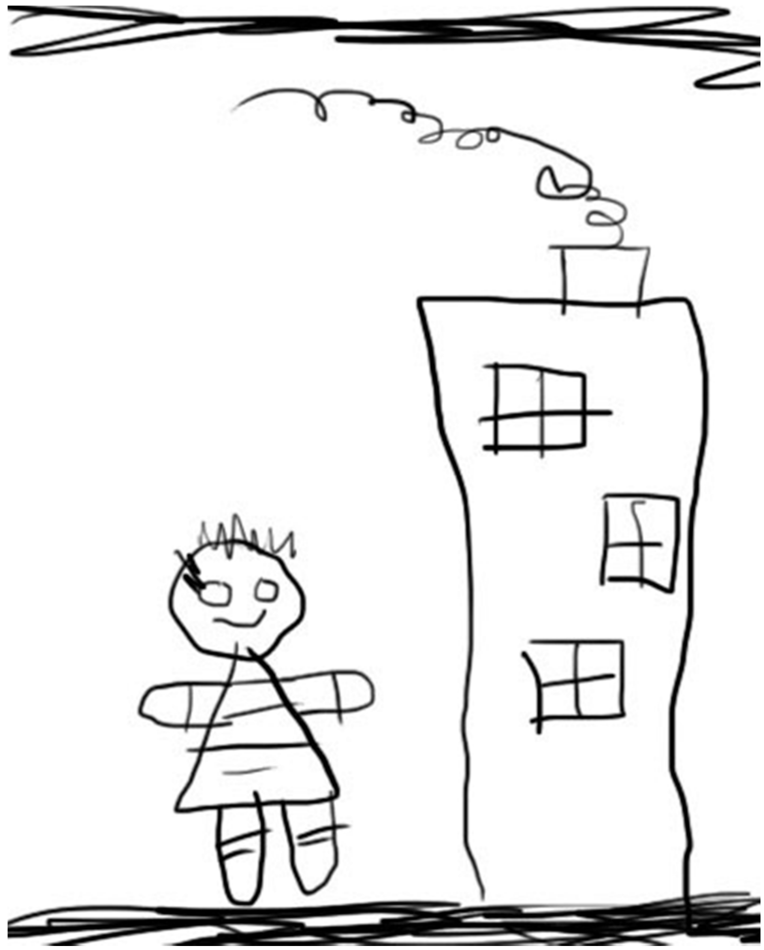

चित्र 3 नियोजन अवस्था के बालक द्वारा निर्मित चित्र का एक उदहारण

4. **यथार्थ अरुणोदय की अवस्था ७-९ साल The Dawning Realism-(7-9 years old)**

चित्र निर्माण के विकास की चौथी अवस्था यथार्थ अरुणोदय की अवस्था है जिसका आरम्भ 7 वर्ष में हो जाता है इस अवस्था में बच्चे आपने चित्रों के सन्दर्भ में आलोचनात्मक हो जाते हैं उन्हें यह स्पष्ट प्रतीत होने लगता है कि विभिन्न वस्तुओं के चित्रों का एक संरचित क्रम काफी नहीं है और उनकी चित्रकारी पहले से अधिक जटिल एवं सूक्ष्म होती जाती है इस स्तर पर भी हालाँकि वे स्कीमा का प्रयोग करतेहैं पर वह एक पहले के अवस्थाओं जैसी एक सामान्य स्कीमा न होकर एक जटिल स्कीमा होती है इस अवस्था में उनके चित्रों में अति-आच्छादन (Overlapping) प्रायः देखने को मिलने लगता है साथ ही उनके चित्रों में स्थानिक (Spatial) सम्बन्ध और स्पष्ट हो जाते हैं

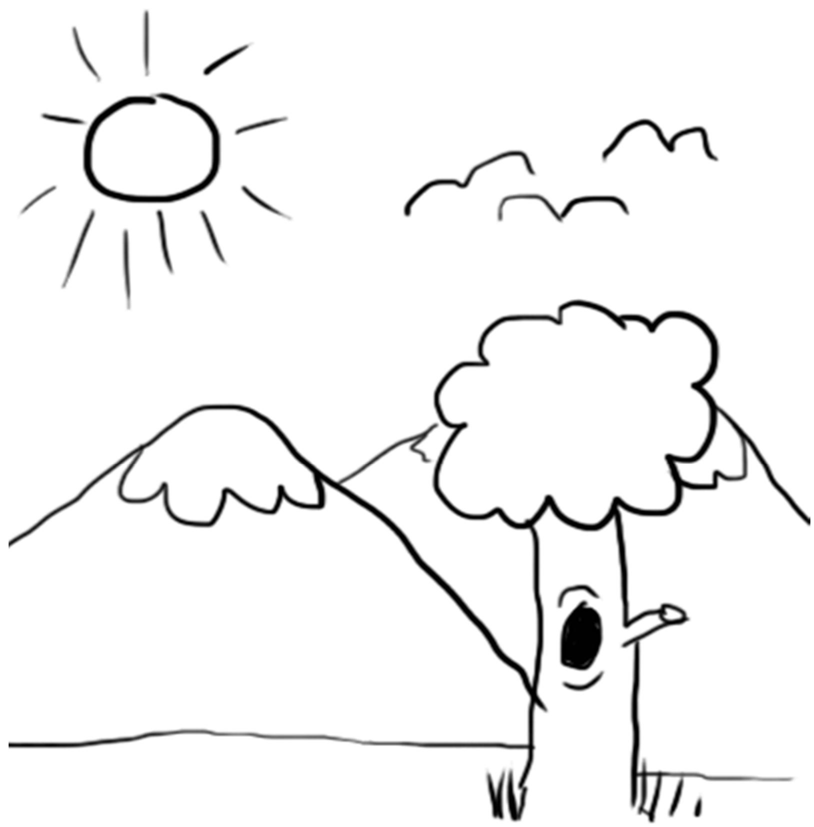

चित्र 4 यथार्थ अरुणोदय की अवस्था के ब्लाक द्वारा निर्मित एक चित्र का उदहारण

5. **छद्म प्राकृतिक अवस्था १०-१३ साल The Pseudo-Naturalistic Stage-(10-13 years old)**

लान्फेल्ड के कलात्मक विकास की पांचवीं अवस्था है छद्म प्राकृतिक अवस्था जो 9 साल के आयु से आरम्भ होती है इस अवस्था में मूल्यों एवं प्रकाश का चित्रण उनके चित्रों में दिखाई देने लगता है इस स्तर पर बच्चे अपने चित्रों के प्रति अत्यंत संवेदन शील एवं विवेचनात्मक हो जाते हैं कलात्मकता केविकास के इस चरण में बच्चे आपनी सफलता के प्रति सजग हो जाते हैं और चित्रांकन के सन्दर्भ में सफलता का निर्धारण उनके चित्र में प्राप्त वास्तविकता का स्तर होता है इस स्तर पर चित्रांकन का अपेक्षित वास्तविकता स्तर प्राप्त न होने पर वे कुंठा ग्रस्त होने लगते हैं इस अवस्था में यह अत्यंत आवश्यक है कि उन्हें उपयुक्त प्रोत्साहन एवं बढ़ावा दिया जाये चित्रकला के विकास में इस अवस्था का विशेष महत्व है इसमें बालक की कल्पना-शक्ति का प्राधान्य न रहकर उसकी विवेचनात्मक शक्ति का प्राधान्य रहता है। चाक्षुश अनुभवों का अधिक असर होने के कारण बारीकियों पर नजर पड़ती है । इसी कारण वह अपने चित्र में भी उन बारीकियों को दिखाना चाहता है। उसकी

पूरी दृष्टि ही चाक्षुष-प्रधान हो जाती है। इस अवस्था में बच्चा हर काम को बड़ों की तरह करने की कोशिश करता है। वह कभी यह महसूस नहीं करता कि वह बड़ों जैसा नहीं है। जैसा बड़ों को करते देखता है, वैसा ही वह भी करना चाहता है। कला में भी यही बात लागू होती है। कला में समाज की साधारण रुचि का झुकाव वास्तविकता की तरफ रहा है। कुछ कलाकारों को और विशेषज्ञों को छोड़कर अधिकतर व्यक्ति ऐसी ही तस्वीरें या मूर्ति पसंद करते हैं, जो वास्तविकता-प्रधान हों। घरों में, पुस्तकों में और सब जगह अधिकतर चित्र वास्तविक (रियलिस्टिक) ही रहते हैं। बच्चे अगर किसी को चित्र बनाते हुए भी देखते हैं तो वे भी अक्सर ऐसे ही चित्र बनानेवालों को देखते हैं, जो

वास्तविक चित्र बनाते हों।

चित्र 5 छद्म प्राकृतिक अवस्था के बालक द्वारा निर्मित चित्र का एक उदहारण

6. निर्णय अवस्था (13-16 साल) (The Decision Stage-13-16 years)

चित्रकला विकास की आखिरी परन्तु महत्त्वपूर्ण अवस्था निर्णयात्मक अवस्था है जिसमें बच्चे या तो अपनी चित्रकला जारी रखने का निर्णय करते हैं या वे चित्रकला को बिना योग्यता के एक कार्य के रूप में आंकने लगते हैं इस अवस्था में स्व विवेचना एक अन्तर्निहित क्रिया होती है, कई किशोर यह विश्वास करने लगते हैं कि उनमे चित्रकला के आवश्यक कौशल नहीं हैं या फिर कई किशोर अपने चित्रकला कौशलों को उन्नत करने में लगे रहते हैं वास्तविकता के बारे में सचेत और संज्ञान होने पर जब वह एक चित्र बनाने जाता है, किंतु चित्र उतना वास्तविक नहीं बनता, जितना उसे दिखता है उसकी आंखें वस्तु में और उसके चित्र में कोई भी फर्क नहीं चाहतीं, परन्तु ऐसा न होने पर उसे नैराश्य का अनुभव होता है और कला की तरफ से उसका दिल हटने लगता है।

कला-शिक्षकों का मानना है कि कुछ जन्मजात कलाकारों को छोड़कर यह अवस्था हर व्यक्ति के जीवन में आती ही है। उनका कहना है कि यह विकास की एक प्राकृतिक सीढ़ी है। हर एक बालक को इस संकट-काल से गुजरना ही पड़ता है। इस निर्णयात्मक अवस्था में उपयुक्त सहयोग मिलने पर बालक आपना चित्रांकन कार्य जररी रखते हैं अन्यथा उस से विमुख हो जाते हैं इस निर्णयात्मक अवस्था पर बच्चों को उपयुक्त परामर्श दिया जाये और यह बताया जाये कि वे चित्रांकन को कौशल के स्तर की परवाह किये बिना जारी रखें और यह समझाया जाये कि अभ्यास द्वारा प्रखरता का कोई भी स्तर प्राप्य है तब बच्चों की रूचि आगे भी चित्रकला में बनी रह सकती है अन्यथा वे धीरे धीरे इस से दूर हो जाते हैं यदि देखा जाये तो चित्रकला विकास की यह आखिरी अवस्था भविष्य के एक चित्रकार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है और एक संपूर्ण कलाकार के उद्भव की अवस्था है

चित्र 6 निर्णय अवस्था के बालक द्वारा निर्मित एक चित्र का उदहारण

8. विभिन्न स्तरों पर चित्रकला / दृश्य कला शिक्षण के उद्देश्य

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद के अनुसार पूर्व प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षण के उद्देश्य निम्नांकित हैं:

8.1 कला शिक्षा के उद्देश्य (पूर्व प्राथमिक स्तर)

1. आनंद का अनुभव।
2. वातावरण के प्रति बच्चे की आंतरिक संवेदनशीलता जागरूक करना।
3. प्राकृतिक सामग्रियों के साथ स्वतंत्र रूप से खेलते हुए अधिगम को नृत्य एवं गीत के रूप में, गति एवं आवाज के माध्यम से, प्राकृतिक ज्ञान के द्वारा, रंगों, प्रारूपों, विभिन्न लयों आदि का आनंद उठाना।

8.2 कला शिक्षा के उद्देश्य (प्राथमिक स्तर)

1. एकीकृत अधिगम के माध्यम से आनंद का अनुभव।
2. वातावरण के प्रति सौंदर्य बोध (जिसमे कक्षा, घर, विद्यालय,समुदाय)।
3. जीवन के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में विचारों एवं भावनाओं की स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

4. बच्चे के सभी संवेदनाओं का विकास निरीक्षण , खोज एवं अभिव्यक्ति के माध्यम से।

8.3 कला शिक्षा के उद्देश्य (उच्च प्राथमिक_ स्तर)

1. आनंद का अनुभव।
2. सौंदर्य बोध एवं संवेदना के प्रति अंतदृष्टि का विकास।
3. कला ज्ञान, दैनिक जीवन एवं उच्च विषयों का एकीकरण।
4. रचनात्मकता को बढ़ावा।
5. छात्रों को वृहत संस्कृति, धरोहरों एवं राष्ट्र के प्रति चैतन्य बनाना।

8.4 कला शिक्षा के उद्देश्य (माध्यमिक स्तर)

1. आनंद का अनुभव।
2. रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं दैनिक प्रयोग हेतु वस्तुओं का निर्माण हेतु नविन माध्यमों एवं तकनीकों से परिचय कराना।
3. सांस्कृतिक विविधता एवं राष्ट्रीय धरोहरों तथा लोक कलाओं एवं लोक संस्कृतियों के प्रति जागरूकता का विकास करना।
4. दैनिक जीवन में छात्रों को कलात्मकता एवं सौंदर्य बोध के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना।
5. स्थानीय कलाओं एवं कलाकारों से परिचय कराना।
6. स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्रियों एवं सामुदायिक सहयोग के द्वारा रचनात्मकप्रकृति के प्रति एवं विभिन्न कलाओं के प्रति प्रशंसा भाव को उन्नत करना।

9. विभिन्न स्तरों पर चित्रकला / दृश्य कला शिक्षण के उद्देश्य

चित्रकला शिक्षण की कक्षा का आयोजन के प्रमुख तत्व

प्रभावी कला शिक्षा का आयोजन (Organization of an Effective Class of Visual Art Education)

कला शिक्षा कक्षा की सफलता में प्रभावी कक्षा व्यवस्था की अहम भूमिका है। एक शिक्षक को इसके लिए उपयुक्त कक्षा व्यवस्था करनी चाहिए| प्रभावी कक्षा व्यवस्था निम्नांकित तीनवृहत श्रेणियों के अंतर्गत की जा सकती है :

1. शिक्षक की योजना

2. कक्षा व्यवस्था
3. कार्य इकाई की योजना
4. बच्चों के कार्य का मूल्याङ्कन एवं उसकी समालोचना

9.1 शिक्षक की योजना

- शिक्षक को बच्चों की दृश्यात्मक कल्पनाशीलता का अनुभव होना चाहिए।
- शिक्षक को कला निर्माण प्रक्रिया एवं उसमें प्रयुक्त सामग्रियों की सामान्य जानकारी होनी चाहिए।
- बच्चों की विकासात्मक अवस्थाओं की जानकारी शिक्षक को व्यक्तिगत भिन्नताओं एवं आवश्यकताओं को समझने में मदद करेगा।
- दृश्य कला निर्माण का प्रायोगिक अनुभव शिक्षक को विभिन्न कला सामग्रियों की अभिव्यक्ति संभावनाओं को समझने में मदद करेगा।
- कला अभिव्यक्ति का थीम/ विषय बच्चों के उपयुक्त अनुभवों पर आधारित होना चाहिए।
- बच्चों के अनुभव के वृहत क्षेत्र निम्नांकितहो सकते है –
    - आसपास का वातावरण
    - आसपास के व्यक्ति एवं अन्य जीव
    - विलक्षणताएं एवं रहस्य

इस प्रकार के थीम/ विषयों का चयन बच्चों को सजीव अनुभव (Life experience) में मदद करता है।

एक शिक्षक के लिए यह महत्वपूर्ण है कि एक विशेष कलात्मक कार्यकलाप का रुचिकर तरीके से परिचय कैसे कराया जाये। इसके लिए एक शिक्षक निम्नांकित कार्य कर सकता है:-

- बच्चों के अनुभव व कल्पनाशीलता पर आधारित विषय का चयन। उदाहरण के लिए बच्चों को इस प्रकार के विषय दिए जा सकते हैं:- मित्रों के साथ खेलना, मेरा मोहल्ला, मेरा घर, मेरा कमरा आदि।
- उपकरणों एवं सामग्रियों का अभिप्रेरक के रूप में प्रयोग।
- बच्चों के निरिक्षण एवं उने उत्साह के अनुसार कार्य कलाप।
- विभिन्न कलाकारों की कलाकृतियों का अभिप्रेरक के रूप में प्रयोग।

9.2 **कक्षा व्यवस्था** (Class Room Organization)

- कक्षा का एक सकारात्मक एवं सहयोगपूर्ण वातावरण जहाँ बच्चों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हो
- कक्षा में कला सामग्रियों एवं उपकरणों की उपयुक्त व्यवस्था।
- कलात्मकता की आवश्यकता के अनुसार स्थान की उपलब्धता।
- एक अधिगमपूर्ण वातावरण।
- प्रदर्शन स्थान।
- समय प्रबंधन।
- साफ सफाई की व्यवस्था की अग्रिम योजना।
- आरामदायक स्थान का चयन।
- उपयुक्त फर्नीचर जिसमें छात्रों को आने-जाने में असुविधा न हो।
- पानी की सुलभता।

9.3 कार्य इकाई की योजना (Unit Planning)

- आवश्यक सामग्रियों की सूची तैयार करें।
- सामग्रियों की उपयुक्त एवं उपलब्धता की अग्रिम जाँच हो।
- सामग्री आकर्षक होने चाहिए।
- उपयुक्त सुरक्षा व्यवस्था।
- कक्षा की आकर्षक सजावट।
- सम्पूर्ण विद्यालय भवन में प्रदर्शन की उपयुक्त व्यवस्था।

9.4 बच्चों के कार्य का मूल्याङ्कन एवं उसकी समालोचना

कला शिक्षण कक्षा की समाप्ति के उपरांत शिक्षक पूर्व निर्धारित मानदंडों के आधार पर उसका मूल्याङ्कन कर सकता है परन्तु शिक्षक द्वारा की गयी समालोचना बालक पर अनावश्यक दबाव बना सकता है। ऐसे में यदि शिक्षक बच्चों को पारस्परिक आलोचना (Peer Evaluation) एवं निर्धारित मानदंडों पर स्व-आलोचना एवं मूल्याङ्कन को प्राथमिकता दें तो बेहतर होगा। इसके लिए कक्षा के उपरांत आखिर के कुछ मिनटों में बालकों को अपने-अपने चित्र दीवार पर सजाकर लगा देने के लिए कहा जा सकता है। एक-एक करके सभी प्रतिभागी अपना मत हर चित्र के बारे में दें। इससे चित्रकार अपनी गलतियों को समझेगा। बालक, बालकोचित समालोचना करेंगे जो स्वाभाविक भी है और

उनके सहपाठियों को स्वीकार्य है । यदि यह संभव नहो तो प्रस्तुत किये गए चित्र की समालोचना सकारात्मक भाषा में करें अर्थात यदि कुछ अच्छा न लगे तो यह न कहे कि यह ठीक नहीं है बल्कि उसके चित्र के सकारात्मक पहलुओं की प्रशंसा करते हुए उसे यह बताएं कि यदि आप ऐसा करें तो आपका चित्र और प्रभावी हो सकता है ।

10. चित्र कला / दृश्य कला के आयोजन की योजना का एक उदहारण**

(**दृश्य कला की एक कक्षा के आयोजन की योजना का एक उदहारण राज्य शिक्षण प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान संसथान, रायपुर छत्तीसगढ़ द्वार डी.एड. (दूरस्थ शिक्षा) के स्व अधिगम सामग्री से साभार उद्धृत है इस प्रकार की अन्य क्रियाकलापों की जानकारी के लिए देखें:
http://www.scert.cg.gov.in/pdf/dedfirst2013/kalashikshan.pdf)

इकाई की कार्य योजना जो बच्चों की संकल्पना, कौशल एवं अभिवृत्ति पर आधारित है और परीक्षण एवं मूल्यांकन योग्य है।

कलात्मक विषय: उन व्यक्तियों के लिए उपहार जो मेरी देखभाल करते हैं।

क्षेत्र:घर/विद्यालय में सहयोग

क्रिया : चित्र निर्माण

प्रथम चरण : अभिप्रेरण

बच्चों से बात करते हुए उन्हें प्रेरित करना

1. घर पर कौन आपकी देखभाल करता है ?
2. क्या घर पर बहुत सारे काम होते हैं ?
3. क्या आप उन कार्यों में माता-पिता की मदद करते हैं ?
4. आप सबसे अच्छे से कौन सा कार्य कर लेते हैं ?
5. क्या आप उसकी एक तस्वीर बना चाहेंगे ?

दूसरा चरण : कार्य

सामग्री उपलब्ध कराना एवं उन्हें उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य को चित्र में उकेरने के लिए कहना यथा: साफ़-सफाई में सहयोग, बिस्तर लगाने में सहयोग, खाना बनाने में सहयोग आदि |

तीसरा चरण : मूल्यांकन

बच्चों से बात करते हुए पूछना

1. तस्वीर में क्या प्रदर्शित है ?
2. क्या सामग्री प्रयोग की गई ?
3. तस्वीर/चित्र का सबसे सफल भाग ?

शिक्षा उपागम : बच्चों के जीवन से सम्बन्धित जाकारी आदि देते हुए विभिन्न चिन्हों, रेखाओं, आकृतियों की गुणवत्ता के बारे में बताये।

मूल्यांकन: बच्चे के अभिव्यक्ति संकेतों को समझें जो उनके सहयोग सम्बन्धी विचार एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करता हो।

कोई स्पष्ट समस्या दिखे तो उससे बाते करें।

खंड C

प्रोजेक्ट रिपोर्ट लिखने सम्बन्धी आवश्यक निर्देश

11. प्रोजेक्ट रिपोर्ट लिखने सम्बन्धी आवश्यक निर्देश

- नाट्य एवं कला शिक्षण का यह कार्य कुल 50 अंकों का है।
- सामान्य विषयों के लिए बनायी जानेवाली पाठ योजना के फॉर्मेट के अनुसार ही नाट्य एवं कला के पाठों के शिक्षण के लिए भी एक विस्तृत कार्य योजना बनाइये।
- निर्धारित पाठ योजना के अनुसार आप कला एवं नाट्य शिक्षण की कक्षाओं को विद्यालय में पढ़ायें एवं उसकी एक रिपोर्ट प्रस्तुत करें। प्रत्येक कक्षा की अवधि न्यूनतम 45 मिनट की होनी चाहिए।
- आप कलात्मक शिक्षण के लिए 4 पाठों का चयन कीजिये जिसमे से दो नाट्य कला से सम्बंधित हों और दो चित्रकला से सम्बंधित पाठ हों।
- आपके प्रोजेक्ट रिपोर्ट के मूल्याङ्कन में चारों पाठों को 10-10 अंक कुल 40 अंक दिए जायेंगे, 10 अंक आपके सम्पूर्ण रिपोर्टिंग स्टाइल (जिसमे आपकी हस्तलिपि, आपका प्रस्तुतीकरण, आपकी मौलिकता एवं आपकी लेखन शैली शैली शामिल है) के लिए दिया जायेगा इस प्रकार कुल 50 अंक आपके नाट्य एवं कला शिक्षण के प्रायोगिक कार्य के लिए निर्धारित होगा।
- पढ़ाये गए पाठों के आधार पर आप नाट्य एवं कला शिक्षण का एक रिपोर्ट तैयार करें जिसमें आपके द्वारा तैयार किये गए पाठ योजनायें एवं अन्य आवश्यक सामग्रियां सम्मिलित होंगी।
- आपका प्रोजेक्ट रिपोर्ट आपकी हस्त लिपि में लिखा होना चाहिए।
- उपरोक्त अनुसार चार कक्षा पाठन रिपोर्ट न होने की सूरत में आपका प्रोजेक्ट / प्रायोगिक कार्य अधूरा माना जायेगा एवं तदनुसार आपको शून्य अंक प्रदान किया जायेगा।
- चित्रकला / पेंटिंग के सन्दर्भ में तीन बच्चों के द्वारा निर्मित चित्र उनके नाम, विद्यालय के नाम एवं कक्षा के विवरण सहित आपके रिपोर्ट में संलग्न किया जाना अपेक्षित है। नाट्य कक्षा के शिक्षण के सन्दर्भ में नाट्य कक्षा के उपरांत (यदि संभव हो तो) तीन प्रतिभागियों के संक्षिप्त अनुभव उनकी हस्तलिपि में संलग्न किये जाने चाहिए।
- आप अपना कला एवं नाट्य शिक्षण का प्रोजेक्ट रिपोर्ट अपने **निर्धारित अध्ययन केंद्र पर संपर्क कक्षाओं के दौरान जमा करें** उसे सीधे विश्विद्यालय को नहीं भेजें।
- इस निर्देशिका के सन्दर्भ में आपके सुझावों का हम स्वागत करते हैं। यह सुझाव इस निर्देशिका में प्रदत्त सामग्री के सन्दर्भ में हो सकती है या फिर आप कुछ नए क्रिया कलाप सुझाना चाहते हैं तो शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्विद्यालय, कोटा के पते पर भेज सकते हैं या फिर उन्हें शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्विद्यालय, कोटा को soe@vmou.ac.in पर ई मेल कर सकते हैं।

12. सन्दर्भ ग्रन्थ / अन्य अध्ययन :

- Birnbaum, A. (2012). Education for Creative Living: Ideas & Prposals of Tsunesaburo Makiguchi, National Book trust, New Delhi
- NCERT (2006) Poition Paper: National Focus Group on Art, Music, Dance & Theatre,NCERT, New Delhi
- NCERT (2008) Syllabus of Art Education, NCERT, New Delhi
- NCERT (2010) Country Report: Art Education in India, NCERT, New Delhi
- Contractor, M.R. (2011). Creative Drama & Puppetry in Education, National Book Trust, New Delhi
- NCERT (2015) Training Package in Art Education, NCERT, New Delhi
- Prasad, D. (2014) Ravindranath Tagore: Philosophy of Education& painting, National Book Trust, New Delhi
- SCERT (2013) कला एवं कला शिक्षण: दूरस्थ डी एड हेतु स्व अध्ययन सामग्री, SCERT, छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित
- http://www.scert.cg.gov.in/pdf/dedfirst2013/kalashikshan.pdf
- http://www.ncca.ie/uploadedfiles/Curriculum/Primary_Drama_Guidelines.pdf
- http://www.creativitycultureeducation.org/wp-content/uploads/arts-in-education-and-creativity-2nd-edition-91.pdf
- http://steam-notstem.com/wp-content/uploads/2010/11/finalreport.pdf

****